पटना ●गुरुवार, 25 जुलाई 2024 मूल्यः 5:00, पृष्ठः 8 वर्षः 5, अंकः194 www. bordernewsmirror@gmail.com 9471060219, 9470050309

BORDER NEWS MIRROR
BNM
to the point...
राष्ट्रीय द्विभाषिक समाचार पत्र

बॉर्डर न्यूज मिरर

"खबरों से समझौता नहीं"

तुरकौलिया की 09 महिलाओं ने ... 3 www. bordernewsmirror.com जान्हवी कपूर की फिल्म... 8

दिल्ली मार्च जारी रखेंगे, किसानों का बड़ा ऐलान

राहुल गांधी से मुलाकात के बाद लिया निर्णय, संसद में भी उठेगी आवाज

नई दिल्ली (एजेंसी)। न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में सुधार के लिए सरकार पर दबाव बना रहे किसानों ने बुधवार सुबह संसद परिसर में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी से मुलाकात की। राहुल गांधी लोकसभा में विपक्ष के नेता भी हैं। उन्होंने पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु और कर्नाटक के 12 किसान नेताओं के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की। राहुल गांधी के मुलाकात के बाद एक किसान नेता ने कहा कि सरकार उनकी मांगे मानने में विफल रही है और वे दिल्ली मार्च जारी रखेंगे। किसानों में से एक जगजीत सिंह दल्लेवाल ने कहा कि सरकार अब तक आश्वासनों को पूरा करने में विफल रही है। स्वामीनाथन रिपोर्ट का क्रियान्वयन जरूरी है। हम दिल्ली की ओर मार्च जारी रखेंगे। इससे पहले किसानों की मुलाकात राहुल गांधी के संसद भवन स्थित कार्यालय में हुई। इसमें कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल, पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी, पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग, कांग्रेस नेता सुखजिंदर सिंह रंधावा, गुरजीत सिंह औजला, धर्मवीर गांधी, अमर सिंह, दीपेंद्र सिंह हुड्डा और जय प्रकाश भी मौजूद थे। बैठक के बाद अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग ने कहा, राहुल गांधी संसद के अंदर किसानों की आवाज उठाएंगे.. किसानों द्वारा दिल्ली में फिर से मार्च निकालने की योजना बनाने की खबरों पर उन्होंने कहा, उन्हें दिल्ली आकर विरोध करने का पूरा अधिकार है (और) अगर कोई निजी विधेयक लाने की जरूरत पड़ी तो हम उसे भी लाएंगे। इससे पहले राहुल गांधी ने कहा,किसान नेताओं को मैंने संसद भवन में मिलने के लिए बुलाया था लेकिन उन्हें अंदर नहीं आने दिया गया तो मैं मिलने गया।

घाटी की सुरक्षा के लिए खतरा बने 4 सरकारी कर्मचारी

● सभी को बिना जांच के नौकरी से कर दिया गया बर्खास्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर प्रशासन ने चार सरकारी कर्मचारियों को बर्खास्त कर दिया है। वजह बताई है कि यह लोग राज्य की सुरक्षा के लिए खतरा थे। इन सरकारी कर्मचारियों को संविधान के आर्टिकल 311 (2) (सी) के तहत तुरंत प्रभाव से हटा दिया गया है। संविधान का यह आर्टिकल किसी सरकारी कर्मचारी को बिना जांच के बर्खास्त करने की इजाजत देता है। इससे पहले भी कुछ सरकारी कर्मचारियों को बर्खास्त किया जा चुका है। एक ताजा आदेश में प्रशासन ने हंदवाड़ा के सीनियर ग्रेड कांस्टेबल मुश्ताक अहमद पीर, दक्षिण कश्मीर के त्राल के गमराज गांव के पुलिस कांस्टेबल इम्तियाज अहमद लोन, उत्तर कश्मीर के कुपवाड़ा के लालपोरा के खुरहामा गांव के शिक्षा विभाग के जूनियर सहायक बाजिल अहमद मीर और उत्तर कश्मीर के ग्रामीण विकास विभाग के ग्राम स्तरीय कार्यकर्ता मोहम्मद जैद शाह को बर्खास्त कर दिया है।

जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा में सेना को बड़ी सफलता

● एक आतंकी को कर दिया ढेर, सेना का जवान भी घायल

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच रातभर एनकाउंटर हुआ जिसमें एक आतंकवादी मारा गया और एक जवान घायल हो गया।
सेना ने बुधवार को यह जानकारी दी।
श्रीनगर की चिनार कोर ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर अपने पोस्ट में कहा, कुपवाड़ा के कोवुत इलाके में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में खुफिया जानकारी मिलने पर भारतीय सेना और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने 23-24 जुलाई को संयुक्त तलाश अभियान शुरू किया।
सेना ने कहा कि मंगलवार को संदिग्ध गतिविधियां दिखाई देने पर सैनिकों ने संदिग्धों को चुनौती दी। इस पर आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और दोनों ओर से मुठभेड़ शुरू हो गई। सेना ने कहा कि मुठभेड़ में एक आतंकवादी मारा गया और एक सैनिक घायल हो गया। अभियान जारी है।

चुपचाप सुनो, महिला हो तुम कुछ जानती नहीं हो

● नीतिश कुमार ने फिर से बिहार विधानसभा में खोया आपा, आरजेडी की रेखा देवी पर भड़के

पटना (एजेंसी)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार बुधवार को एक बार फिर विधानसभा में आपा खो बैठे। उन्होंने आरजेडी की विधायक रेखा देवी के भाषण पर ऐतराज जताते हुए कहा कि आप क्या बोल रही है। उन्होंने कहा कि महिला हो, कुछ जानती नहीं हो। पता नहीं क्या-क्या बोल रही है। आपको पता है कि महिलाओं की क्या स्थिति थी। 2005 के बाद ही महिलाओं की स्थिति ऐसी हुई। रेखा देवी के आरोपों पर नीतिश कुमार हत्थे से उखड़ गए और फिर जमकर बोले। उनके बयान को आरजेडी समेत विपक्षी दलों ने महिलाओं का अपमान करार दिया है। नीतिश कुमार ने कहा,अरे, महिला हो। कुछ जानती नहीं हो।

मुस्लिमों के बिना संभव नहीं है अमरनाथ यात्रा

● कांवड़ यात्रा से जुड़े आदेश पर उमर अब्दुल्ला ने कह दी बड़ी बात

श्रीनगर (एजेंसी)। नेशनल कांफ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला ने उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में कांवड़ यात्रा के दौरान भोजनालयों पर उनके मालिकों के नाम प्रदर्शित करने के आदेश पर सुप्रीम कोर्ट की ओर से अंतरिम रोक लगाने का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि मुस्लिमों के सहयोग के बिना अमरनाथ यात्रा तक संभव नहीं है। अब्दुल्ला ने कहा कि अगर यह (कांवड़ यात्रा संबंधित) आदेश मुसलमानों को उस यात्रा से दूर रखने के लिए जारी किया गया था, तो अल्लाह के लिए मुझे बताएं कि जब यहां (अमरनाथ) यात्रा होती है, तो वह मुसलमानों के बिना मुमकिन नहीं है।

पेपर लीक पर 10 साल की सजा, एक करोड़ का जुर्माना

बिहार विधानसभा से पास हो गया बिहार लोक परीक्षा बिल

पटना (एजेंसी)। परीक्षा में धांधली और पेपर लीक रोकने के लिए बुधवार को विधानसभा से बिहार लोक परीक्षा विधेयक 2024 पास हो गया है। इस कानून के तहत पेपर लीक करने वालों को 10 साल तक की जेल और एक करोड़ रुपये तक के जुर्माने का प्रावधान है। विधानसभा के बाद अब विधान परिषद में पास होना बाकी है। जिसके बाद इसे राज्यपाल के पास भेजा जाएगा। विधेयक पेश करते हुए संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि विपक्ष ऐसे महत्वपूर्ण कानून का हिस्सा नहीं बनना चाहता, जिसका उद्देश्य युवाओं के लिए एक स्वच्छ परीक्षा प्रणाली सुनिश्चित करना है। विजय चौधरी ने कहा कि यह विधेयक किसी भी तरह से परीक्षाओं को प्रभावित करने वाले पेपर लीक में शामिल संगठित गिरोहों और असामाजिक लोगों को रोकने के लिए कठोर दंड देता है।

शंभू बार्डर खोलने के आदेश पर लग गई 'सुप्रीम' रोक

किसानों की मांगों के लिए समिति गठित करने का दिया निर्देश

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट द्वारा शंभू बार्डर खोलने के आदेश पर फिलहाल रोक लगा दी। साथ ही शीर्ष अदालत ने इस मसले पर निर्णय लेने के लिए एक समिति गठित करने का आदेश दिया है। समिति में अधिकारियों, किसानों और सामाजिक कार्यकर्ता को शामिल करने का निर्देश दिया गया है। दरअसल सुप्रीम कोर्ट ने किसानों की विभिन्न मांगों पर विचार करने के लिए समिति गठित करने का प्रस्ताव रखा है। इस समिति का मुख्य उद्देश्य किसानों को उनकी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की कानूनी गारंटी देने सहित अन्य मांगों पर विचार करना होगा।

सुप्रीम कोर्ट ने यह कदम उस समय उठाया है जब देश के विभिन्न हिस्सों में किसान अपनी मांगों को लेकर आंदोलनरत हैं। किसानों की प्रमुख मांगों में से एक यह है कि उनकी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी को कानूनी दर्जा दिया जाए, ताकि उन्हें अपनी मेहनत का उचित मूल्य मिल सके। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को स्वतंत्र व्यक्तियों की एक समिति बनाने की मंशा व्यक्त ताकि पंजाब-हरियाणा सीमा पर विरोध प्रदर्शन कर रहे किसानों और सरकारों के साथ बातचीत कर मुद्दों का समाधान ढूंढ़ सके। कोर्ट ने पंजाब और हरियाणा राज्यों से उपयुक्त व्यक्तियों के नाम सुझाने को कहा।

नेपाल के काठमांडू में प्लेन क्रैश, 18 की मौत

त्रिभुवन इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर हुआ बड़ा हादसा

काठमांडू (एजेंसी)। नेपाल की राजधानी काठमांडू में एक विमान क्रैश हो गया है। प्लेन में सवार 19 लोगों में से 18 की मौत हो गई है। वहीं घायल पायलट कैप्टन एम. शाक्य को गंभीर हालत में अस्पताल पहुंचाया गया है।

प्लेन काठमांडू से पोखरा जा रहा था। प्लेन ने सुबह करीब 11 बजे त्रिभुवन एयरपोर्ट से उड़ान भरी। इसके कुछ ही देर के अंदर यह क्रैश हो गया। यह प्लेन सौर्य एयरलाइन्स का था। हादसे में मारे गए लोगों में से 17 सौर्य एयरलाइंस के ही स्टाफ थे, जबकि बाकी 2 क्रू मेंबर्स थे। काठमांडू पोस्ट के मुताबिक, हादसे के तुरंत बाद पुलिस और फायर फाइटर्स की टीम घटनास्थल पर रेस्क्यू ऑपरेशन के लिए पहुंची। न्यूज एजेंसी के मुताबिक, एक सुरक्षा अधिकारी ने बताया कि क्रैश के बाद विमान में आग लग गई थी। इसे तुरंत बुझा दिया गया। घटनास्थल से सामने आई तस्वीरों में धुएं का गुबार उठता दिख रहा है। हालांकि, हादसा किस वजह से हुआ इसकी जानकारी अब तक सामने नहीं आई है।

बजट से बिफरा विपक्ष, सरकार के खिलाफ बोला बड़ा हमला

नीति आयोग की बैठक का भी 4 सीएम करेंगे बहिष्कार

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम बजट में गैर भाजपा शासित राज्यों को नजरअंदाज किए जाने से नाराज 'इंडिया' गठबंधन के घटक दलों ने नीति आयोग की बैठक का बहिष्कार करने का ऐलान किया है। इस बैठक में सभी राज्यों के मुख्यमंत्री सदस्य होते हैं। नीति आयोग की बैठक 27 जुलाई को है। इन घटकों ने बुधवार को संसद भवन परिसर में विरोध-प्रदर्शन भी किया है। बहिष्कार करने वालों में कम से कम चार राज्यों के मुख्यमंत्री शामिल हैं।

इनमें कांग्रेस शासित राज्यों के तीन मुख्यमंत्री हैं। ज्ञात हो कि इंडियन नेशनल डेवलेपमेंटल इंक्लूसिव अलायंस (इंडिया गठबंधन) के एक प्रमुख घटक-द्रमुक के प्रमुख और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन राज्य के साथ अन्याय के खिलाफ पहले ही बहिष्कार का ऐलान कर चुके हैं।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की अध्यक्षता में मंगलवार को हुई 'इंडिया' के घटक दलों के संसदीय दल के नेताओं की बैठक में आम बजट पर विस्तार से चर्चा हुई। खरगे के सरकारी आवास पर हुई इस बैठक में लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी सहित कई दलों के नेता मौजूद थे। बैठक में मौजूद एक नेता ने कहा कि बैठक में गैर भाजपा शासित राज्यों को नजरअंदाज करने के मुद्दे पर विस्तार से चर्चा हुई है।

जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा में सेना को बड़ी सफलता

● एक आतंकी को कर दिया ढेर, सेना का जवान भी घायल

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच रातभर एनकाउंटर हुआ जिसमें एक आतंकवादी मारा गया और एक जवान घायल हो गया। सेना ने बुधवार को यह जानकारी दी।

श्रीनगर की चिनार कोर ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर अपने पोस्ट में कहा, कुपवाड़ा के कोवुत इलाके में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में खुफिया जानकारी मिलने पर भारतीय सेना और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने 23-24 जुलाई को संयुक्त तलाश अभियान शुरू किया। सेना ने कहा कि मंगलवार को संदिग्ध गतिविधियां दिखाई देने पर सैनिकों ने संदिग्धों को चुनौती दी। इस पर आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और दोनों ओर से मुठभेड़ शुरू हो गई। सेना ने कहा कि मुठभेड़ में एक आतंकवादी मारा गया और एक सैनिक घायल हो गया। अभियान जारी है। इसके पहले, जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में मंगलवार तड़के नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास आतंकवादियों की घुसपैठ की कोशिश को सेना ने नाकाम कर दिया, जिस दौरान एक जवान शहीद हो गया था।

आतंकवादी या तो जेल में रहेंगे या जहन्नुम में जाएंगे

गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय की राज्यसभा में दो टूक

नई दिल्ली (एजेंसी)। कश्मीर सहित देश की सुरक्षा को सर्वोपरि बताते हुए सरकार ने बुधवार को कहा कि उसकी नीति आतंकवाद को कतई बर्दाश्त नहीं करने की है और आतंकवादी या तो जेल में रहेंगे या जहन्नुम में जाएंगे। गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने राज्यसभा में प्रश्नकाल के दौरान यह भी बताया कि विशेष राज्य का दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 को अगस्त 2019 में हटाए जाने के बाद से जम्मू कश्मीर में भारतीय सेना ने 900 से अधिक आतंकियों को मार गिराया है। आतंकवाद को पूरी तरह समाप्त करने का संकल्प जताते हुए उन्होंने कहा कि पिछले कुछ दिनों में कश्मीर में 28 आतंकियों को मार गिराया गया है। उन्होंने स्वीकार किया कि आतंकी हमलों में हमारे कुछ जवानों की भी जान गई है। उन्होंने पूरक प्रश्न के जवाब में बताया कि 2004 से 2014 के बीच आतंकी घटनाओं की संख्या 7217 थी जबकि 2014 से 21 जुलाई 2024 तक ऐसी 2259 घटनाएं हुई हैं जो नहीं होना चाहिए थीं। इस पर राजनीतिक नहीं करनी चाहिए। केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार की नीति आतंकवाद को कतई बर्दाश्त नहीं करने की है तथा आतंकवादी या तो जेल में रहेंगे या जहन्नुम में जाएंगे।

अरवल के मेहंदिया में रिटायर्ड शिक्षक ने अपनी पत्नी की हत्या कर शव के 12 टुकड़े किए

अवैध संबंध का था शक, मीट शॉप की तरह लकड़ी पर रखकर शव को काटा

अरवल, एजेंसी। अरवल के मेहंदिया में एक रिटायर्ड शिक्षक ने अपनी पत्नी की हत्या कर शव के 12 टुकड़े कर दिए। हत्या करने के तरीके को लेकर कई तरह के सवाल उठ रहे हैं। हालांकि, पुलिस की पूछताछ में आरोपी पति बीरबल प्रसाद (76) ने अपनी पत्नी सुमंती सिन्हा (70) की हत्या किए जाने के पीछे अवैध संबंध को वजह बताया है। उसने मीट शॉप की तरह लकड़ी पर रखकर पत्नी के शव के टुकड़े-टुकड़े किए। आसपास के लोगों ने बताया कि मृतका सुमंती सिन्हा, बीरबल की दूसरी पत्नी थी। पहली पत्नी की 1989 में घर में आग लगने के कारण मौत हो गई थी। उस वक्त बीरबल फूस के घर में रहते थे। घटना मेहंदिया स्थित जमुहारी में सोमवार को हुई। हत्या के बाद पुलिस ने आरोपी रिटायर्ड शिक्षक को तुरंत गिरफ्तार कर लिया। शव को 12 टुकड़ों में काटने के मामले में पुलिस ने खुलासा किया है। पुलिस के अनुसार, बुजुर्ग शादी के बाद से ही अपनी पत्नी पर अवैध संबंध को लेकर शक था। परिवार की वजह से शादी के वक्त उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया। लेकिन, 2021 से वो अपनी पत्नी को मारने की प्लानिंग कर रहा था। आरोपी ने सोमवार की दोपहर ही गड़ासा में धार भी लगवाया था।

मोटी लकड़ी पर रख शव को काटा

पुलिस के अनुसार, आरोपी ने पत्नी के ब्रेस्ट के साथ पैर की अंगुली को भी सही सलामत नहीं छोड़ा। आरोपी ने बंद कमरे में वारदात को अंजाम दिया। घटना से पहले आरोपी मोटी लकड़ी और गड़ासा कमरे में ले गया। इसके बाद पत्नी के शव

को लकड़ी पर रखकर टुकड़े-टुकड़े किए। मौके पर शव के टुकड़े देखकर पुलिस के भी होश उड़ गए। फॉरेंसिक जांच के लिए एफएसएल की टीम बुलाई गई। इसके बाद शव के टुकड़े को इकट्ठा किया गया। घर के अलग-अलग कोने में शव के टुकड़े फेंके गए थे। पुलिस ने 12 टुकड़े को इकट्ठा किया।

पुलिस की इस थ्योरी पर सवाल

हालांकि, पुलिस की इस थ्योरी पर सवाल भी उठ रहे हैं। अगर बीरबल को अपनी पत्नी पर शक था और उसकी हत्या करना चाहता था तो इतने सालों तक वो इंतजार क्यों कर रहा था। जबकि, पति-पत्नी अकेले ही इस घर में रहते थे। जब हत्या की तो इतनी दरिंदगी से।

पुलिस ने घर को सील कर दिया

आरोपी रिटायर्ड शिक्षक बीरबल प्रसाद के घर को पुलिस ने सील कर दिया है। वहीं, इसी घर के पीछे उनकी बहू का घर है। पर वो भी घर बंद कर बच्चों को लेकर कहीं चली गई हैं। घटना के बाद बहू ने ही खून देखने के बाद आसपास के लोगों को इसकी सूचना दी। इसके बाद पुलिस को खबर की गई।

आरोपी के चार बेटे हैं, लेकिन किसी से बात नहीं होती थी

डीएसपी कृति कमल ने बताया कि बीरबल के चार बेटे हैं। पहली पत्नी से एक और दूसरी पत्नी से तीन बेटे और एक बेटी। बड़ा बेटा पप्पू कुमार इंजीनियर है। दूसरे बेटा मंटू कुमार पटना में रह कर ऑटो चलाता है। तीसरा बेटा संटु कुमार बीएसएफ में तैनात हैं। वहीं, चौथा बेटा राहुल कुमार शिक्षक है। आरोपी की एक बेटी भी है वो टीचर है। आरोपी की किसी बेटे से बात नहीं होती थी। बेटों से बात नहीं होने से अकेलापन होने के कारण भी इस घटना को अंजाम दिया गया है। उन्होंने कहा कि पुलिस ने मौके से हत्या में प्रयुक्त हथियार भी जब्त कर लिया है। बीरबल को 50 हजार रुपए पेंशन मिलते हैं। करीब चार लाख रुपए का उनके ऊपर कर्ज भी है। वो कभी-कभार पत्नी से झगड़ा भी करते थे। पता नहीं सोमवार को ऐसा क्या हुआ कि पत्नी को बीरबल ने दरिंदगी से मार डाला।

संक्षिप्त समाचार

महिला से सोने का चेन छीना, दो गिरफ्तार

गया, एजेंसी। गुरुआ थाने की पुलिस ने एक महिला से सोने की चेन छिनने के मामले में दो युवकों को गिरफ्तार कर मंगलवार को जेल भेज दिया। सोमवार को गुरारु थाने के बहेरा गांव की एक महिला सुजल देवी अपने पति के साथ बाइक से जा रही थी। इसी बीच रघुनाथखाप गांव के पास बाइक पर सवार दो युवकों ने झपट्टा मार कर महिला के गले से सोने की चेन छीन लिया। घटना की सूचना मिलते ही गुरुआ थाने की पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से दोनों युवकों को गिरफ्तार कर लिया। थानाध्यक्ष मो. सरफराज इमाम ने बताया कि गिरफ्तार एक युवक रामपुर थाना के ग्रेवाल बिगहा का विकाश कुमार वही दूसरा करीमगंज के मो. अरमान है। गिरफ्तार युवकों के पास से छीनी गई सोने का चैन बरामद कर ली गई। दोनों को जेल भेज दिया गया।

माह में दो बार संयुक्त टीम करे ओवरलोड वाहनों की जांच

भागलपुर, एजेंसी। प्रमंडलीय आयुक्त दिनेश कुमार की अध्यक्षता में खनिजों का अवैध खनन, परिवहन एवं भंडारण तथा ओवरलोड वाहनों के परिचालन आदि से संबंधित समीक्षात्मक बैठक हुई। बैठक में भागलपुर व बांका के डीटीओ व एमडीओ मौजूद रहे। दोनों जिलों के पदाधिकारियों को संयुक्त टीम गठित कर प्रत्येक माह में कम से कम दो बार अभियान चलाकर औचक निरीक्षण कर ओवरलोड वाहनों एवं अवैध खनन के विरुद्ध कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया। जिसकी समीक्षा अगली बैठक में की जाएगी। आयुक्त ने सभी अनीलामित बालूघाटों की नीलामी अगस्त तक पूर्ण किये जाने का निर्देश दिया।

सीमावर्ती इलाके के चेक पोस्टों पर नियमित जांच हो : आयुक्त ने कहा, ईंट-भट्ठों के उपयोग की जमीन के मालिकों के साथ किए गये एग्रीमेंन्ट की वैधता एवं वाणिज्यिक गतिविधियों की जांच करें। इसकी समीक्षा अगली बैठक में की जाएगी। साथ ही दोनों जिलों के खनिज विकास पदाधिकारियों को जिले के सीमावर्ती इलाके के चेक पोस्टों पर औचक निरीक्षण की संख्या में वृद्धि करने एवं नियमित जांच का दायरा बढ़ाने का निर्देश दिया गया।

अभाविप ने कला व खेल के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करने वालों को किया सम्मानित

छपरा, एजेंसी। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के सदस्यों ने 76वें स्थापना दिवस व राष्ट्रीय छात्र दिवस के मौके पर प्रेक्षागृह में प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित कर कला व खेल के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करने वालों को सम्मानित किया। कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर अभाविप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ पूनम सिंह, नगर अध्यक्ष प्रो.जया पांडे ,राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग संपर्क प्रमुख अवध किशोर मिश्रा, उप महापौर रागिनी कुमारी , ई अजीत कुमार ने संयुक्त रूप से किया । डॉ.पूनम सिंह ने कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद अपने स्थापना काल से छात्र हित , समाज हित, राष्ट्रहित के मुद्दों को लेकर अग्रणी रहने वाला एकमात्र छात्र संगठन है। प्रतिभा सम्मान समारोह में कला ,खेल , शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में अव्वल स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया व वही पीछले दिनों अपने स्थापना के वर्षगांठ पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन राष्ट्रीय कला मंच के द्वारा किया गया था । इसमें अव्वल स्थान प्राप्त करने वालों छात्रों के बीच पुरस्कार वितरण किया गया। इसमें छात्रों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया छात्रों के द्वारा नृत्य प्रदर्शन गायकी,भाषण, कविता सुनाया गया। मुख्य रूप से विभाग संगठन मंत्री पुरूषोत्तम कुमार,जिला संयोजक निरज यादव आशीष कुमार ,सोनम कुमारी ,अर्पित कुमार ,राजन सिंह ,सचिन कुमार चौरसिया अंकित राज, अजीत कुमार, कुंदन कुमार, प्रवीण प्रभाकर रॉबिंस राज, धीरज कुमार, शिवम कुमार रितेश प्रकाश धनंजय कुमार गोलू, रजनीश सुधाकर अभिषेक कुमार ,विवेक कुमार, आर्यण कुमार, कविता कुमारी, प्रीति कुमारी, रानी कुमारी, प्रियंका रानी व अन्य मौजूद थे।

पुरानी घोषणाओं की रीपैकेजिंग कर विशेष सौगात का नाम दे दिया: तेजस्वी यादव

पटना, एजेंसी। बिहार के पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव ने केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार के बजट में बिहार के लिए की गई घोषणाओं को पुरानी बताया। उन्होंने कहा कि पुरानी घोषणाओं की रीपैकेजिंग कर इसे विशेष पैकेज और विशेष सौगात का नाम दे दिया गया है। इस तरह बिहार वासियों की आंखों में धूल झोंकी जा रही है। तेजस्वी ने दावा किया कि पटना-पूर्णिया एवं बक्सर-भागलपुर एक्सप्रेसवे, पुल, महाबोधि कॉरिडोर समेत कई प्रोजेक्ट्स उनके कार्यकाल (महागठबंधन सरकार) के दौरान ही मंजूर हो गए थे। बजट 2024 में इन्हीं का फिर से जिक्र कर दिया गया।

राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) नेता तेजस्वी यादव ने कहा कि 2015 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार के लिए 1.65 लाख करोड़ रुपये के विशेष पैकेज की घोषणा की थी। मगर 9 साल बाद भी बिहार को कुछ नहीं मिला। यह बात वह नहीं बल्कि खुद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी कई बार स्वीकार कर चुके हैं। तेजस्वी ने कहा कि जैसे वो घोषणा थी वैसे ही अभी की घोषणा है। उन्होंने बीजेपी को जुमला पार्टी करार दिया और कहा कि यह पुरानी योजनाओं को नया बताने की अपनी विशेष विशेषज्ञता का विशिष्ट प्रदर्शन कर जनता को

फिर एक बार भ्रमित कर रही है। 2014 में पीएम मोदी ने बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने का वादा किया था, उसका क्या हुआ

बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने मंगलवार को सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए केंद्रीय बजट को बिहार के लिए निराशाजनक बताया। उन्होंने कहा कि बिहार को प्रगति पथ पर ले जाने के लिए एक रिवाइवल प्लान की जरूरत थी। इसके लिए विशेष राज्य के दर्जे के साथ विशेष पैकेज की सख्त जरूरत है। रूटीन आवंटन और पूर्व में स्वीकृत योजनाओं को नई सौगात बताकर बिहार का अपमान किया गया है।

नगर निकायों में गुटबाजी पर नीतीश सरकार की लगाम

महापौर के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने का नियम खत्म

पटना, एजेंसी। बिहार के नगर निकायों में मुख्य पार्षद (महापौर) और उप मुख्य पार्षद (उपमहापौर) अब पांच साल तक काम कर सकेंगे। दो साल के अंतराल पर लाया जाने वाला अविश्वास प्रस्ताव अब इनके खिलाफ नहीं लाया जा सकेगा। महापौर एवं उपमहापौर को पांच साल तक बनाए रखने के लिए बिहार नगरपालिका संशोधन विधेयक-2024 सोमवार को विधानसभा से पारित हो गया। विधेयक पेश करते हुए नगर विकास मंत्री नितिन नवीन ने कहा कि मुख्य पार्षद और उप मुख्य पार्षद का निर्वाचन प्रत्यक्ष कानूनी तौर पर हो रहा है। ऐसे में इनके खिलाफ लाया जाने वाले अविश्वास प्रस्ताव को खत्म करना जरूरी है। उन्होंने कहा कि प्रत्यक्ष निर्वाचन के कारण ही बिहार नगरपालिका अधिनियम 2007 में संशोधन किया गया है। बता

दें कि अब तक नियम था कि वार्ड पार्षद नगर निकायों के मुख्य पार्षद या महापौर के खिलाफ निर्वाचन के दो साल के बाद अविश्वास प्रस्ताव ला सकते हैं। उसके बाद फिर से एक-एक साल के अंतराल में यह प्रस्ताव लाने का प्रावधान था। इससे निर्वाचित पार्षदों के बीच गुटबाजी और अनुचित दबाव के कारण नगरपालिकाओं के विकास कार्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित मुख्य पार्षद या उप मुख्य पार्षद के विरुद्ध वार्ड पार्षदों की ओर से अविश्वास प्रस्ताव लाया जाना प्रासंगिक नहीं है। मंत्री नितिन नवीन ने कहा कि नगरपालिकाओं एवं उसकी समिति की बैठक से संबंधित प्रावधानों में स्पष्टता नहीं है। इस कारण बैठकों में विवाद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। विधेयक पारित होने के बाद अब राज्य सरकार के नियम या निर्देश के खिलाफ प्रस्ताव पर विचार नहीं किया जाएगा। सरकार का निर्णय ही अंतिम होगा। नगरपालिकाओं एवं उसकी समिति की बैठक के कार्यवृत्त एक सप्ताह में निर्गत कर दिया जाएगा। संपत्ति कर का निबटारा अब तेजी से होगा। साथ ही नगरपालिका स्तर पर विनियम बनाने में भी सुविधा होगी।

तालाब में डूबने से 14 साल के किशोर की मौत

कैमूर के रामगढ़ थाना क्षेत्र की घटना, नहाने के दौरान हुआ हादसा

कैमूर, एजेंसी। कैमूर के रामगढ़ थाना क्षेत्र के सिझूआ गांव में तालाब में नहाने के दौरान डूबने से 14 वर्षीय किशोर की मौत हो गई। तालाब से कुछ दूर पर काम कर रहे लोगों ने किशोर को डूबते देखा तो तालाब के पास पहुंचकर उसको बाहर निकाला। परिजनों को सूचना देते हुए रेफरल अस्पताल रामगढ़ में भर्ती कराया। जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद बच्चे को मृत घोषित कर दिया। सूचना पर पहुंची रामगढ़ पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया। मृत बच्चे की पहचान रामगढ़ थाना क्षेत्र के सीझूआ गांव निवासी रामप्रवेश बिंद का 14 साल का बेटा संदीप कुमार के रूप में की गई। अक्षय लाल बिंद ने कहा कि तालाब में नहाने के दौरान गहरे पानी में जाने से उसकी मौत हो गई।

70 वर्षीय बुजुर्ग की 25 साल की लड़की से शादी

गया, एजेंसी। गया में 70 साल के बुजुर्ग ने 25 वर्ष की लड़की से शादी की है। बुजुर्ग के दो बच्चे हैं। पत्नी की मौत चार साल पहले हो गई थी। बुजुर्ग बैदा गांव निवासी मोहम्मद कली मुल्लाह नूरानी हैं, जो खुद 70 के हैं पर वे अपनी उम्र 50 साल का बता रहे हैं। वहीं, दुल्हन आमस प्रखण्ड हमजापुर के इस्लामनगर निवासी रेशमा परवीन हैं। नूरानी का कहना है कि घर में बहुत परेशानी है, इसलिए इस उम्र में शादी की है। घर में कोई काम करने वाला नहीं है। वहीं, दुल्हन से शादी के बारे में पूछा गया तो उसने कहा वो इस विवाह से खुश है।

शादी में नहीं था बैंड-बाजा

शादी में कोई बैंड-बाजा नहीं था। कार से दूल्हा अपनी दुल्हन को ले गया। शादी को लेकर किसी ने कोई आपत्ति नहीं जताई है। विवाह भरी महफिल में हुआ है। जिसमें महिलाओं की भीड़ रही। अपनी शादी को लेकर दूल्हा कुछ भी बोलने से कतरा रहा था। इस उम्र में शादी के सवाल पर चिढ़ रहा था। नूरानी किसान हैं। पत्नी की मौत के बाद वे अकेले पड़ गए थे। नूरानी के दोनों बेटों की भी शादी हो चुकी है। दोनों बाहर काम करते हैं।

सीएसपी संचालक से 6 लाख रूपए की लूट:अररिया फारबिसगंज-रानीगंज एनएच-77 पर वारदात

घटना को अंजाम देकर बदमाश फरार

अररिया, एजेंसी। अररिया के फारबिसगंज-रानीगंज मार्ग एसएच-77 पर लुटिया पुल के समीप मंगलार की शाम दो बाइक सवार चार हथियारबंद बदमाशों ने सीएसपी संचालक के कर्मी से 6 लाख रुपया की लूट की घटना को अंजाम दिया है। जानकारी के अनुसार फारबिसगंज प्रखंड के सैफगंज वार्ड संख्या-6 निवासी व पीएनबी बैंक के सीएसपी संचालक मिंटू साह के कर्मी सैफगंज वार्ड संख्या-2 निवासी अखिलेश कुमार ठाकुर सैफगंज से पंजाब नेशनल बैंक के मुख्य शाखा फारबिसगंज पहुंचे। बैंक से 5 लाख 94 हजार रुपया की निकासी कर वह रूपए को बैग में रख कर बाइक पर सवार होकर सैफगंज अपने घर जा रहे थे। इसी क्रम में सीएसपी संचालक कर्मी जैसे ही लुटिया पुल के समीप पहुंचे थे कि दो बाइक पर सवार चार हथियारबंद बदमाश ने उनके बाइक को ओवर टेक कर रोका।

राशि से भरा बैग व मोबाइल फोन लूट कर बदमाश फरार

बदमाश हथियार दिखा कर गाली गलौज करते हुए राशि से भरा बैग व मोबाइल फोन लूट कर फरार हो गए। पीड़ित सीएसपी संचालक कर्मी के अनुसार बैग में लगभग 6 लाख रुपया व आवश्यक कागजात था।

बताया जाता है कि लूट की घटना घटित होने के बाद पीड़ित ने सीएसपी संचालक मिंटू कुमार साह को घटना की जानकारी दी, इसके बाद सीएसपी संचालक ने घटना की जानकारी पुलिस को दी। घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर फारबिसगंज एसडीपीओ मुकेश कुमार साहा, थानाध्यक्ष राघवेंद्र कुमार सिंह

सहित अन्य पुलिस पदाधिकारी घटना स्थल पर पहुंच गए। पीड़ित कर्मी से लूट की घटना के संदर्भ में जानकारी ली। आसपास में लगे सीसीटीवी फुटेज को खंगालते हुए मामले की जांच जारी है। बदमाशों की गिरफ्तारी के लिए सघन छापेमारी अभियान शुरू कर दिया है। वहीं, मामले को लेकर फारबिसगंज एसडीपीओ मुकेश कुमार साहा ने कहा कि लूट की घटना को अंजाम देने वाले अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी अभियान चलाया जा रहा है। जल्द ही अपराधी पुलिस के गिरफ्त में होगा।

पीरपैंती पावर प्लांट से आत्मनिर्भर बनेगा बिहार, खुले बाजार से नहीं खरीदनी पड़ेगी बिजली

भागलपुर, एजेंसी। भागलपुर जिले के पीरपैंती में बनने वाला सुपर थर्मल पावर प्लांट बिहार की भविष्य की बिजली की जरूरतों को पूरा करेगा। 800 मेगावाट की तीन इकाई के निर्माण होने से पीरपैंती में 2400 मेगावाट बिजली उत्पादित होगी। बिहार में आए दिन नए कल-कारखाने लग रहे हैं।

अभी हर साल 600 मेगावाट बिजली खपत में बढ़ोतरी हो रही है। पीरपैंती पावर प्लांट के बनने से इस खपत को पूरा करने में मदद मिलेगी। बिहार सरकार को खुले बाजार या निजी कंपनियों से बिजली लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। यानी कि बिजली के मामले में बिहार आत्मनिर्भर बन जाएगा। दरअसल बक्सर के चौसा, लखीसराय के कजरा और भागलपुर के पीरपैंती में 660 मेगावाट की दो-दो यूनिट का निर्माण होना था। 14 साल पहले बनी इस योजना के तहत चौसा पावर प्लांट का काम शुरू हो गया। मगर लखीसराय के कजरा और भागलपुर के पीरपैंती में 660 मेगावाट की दो-दो यूनिट बिजली घर बनाने का मामला फंस गया। तय हुआ कि कजरा एवं पीरपैंती में सोलर पावर प्लांट बनाया जाएगा।

कजरा में 150 मेगावाट सोलर बिजली पर काम शुरू हो गया लेकिन पीरपैंती में हुए आकलन में पाया गया कि हरा-भरा क्षेत्र अधिक होने के कारण मात्र 50 मेगावाट ही सोलर बिजली उत्पादित हो सकती है। इस कारण ऊर्जा विभाग ने तय किया कि पीरपैंती में थर्मल बिजली घर का निर्माण कराया जाएगा।

इसी बीच पीरपैंती में ताप विद्युत केंद्र की स्थापना करने के लिए कोल इंडिया की ओर से बिहार को प्रस्ताव दिया गया। इसके बाद ऊर्जा विभाग ने कोयला मंत्रालय को पत्र लिखकर अनुरोध किया कि इस दिशा में काम करने की स्वीकृति प्रदान करे। पीरपैंती में 1020.60 एकड़ भूमि पहले से अधिग्रहित है, इसलिए यहां पावर प्लांट बनाने में कोई परेशानी नहीं होगी। बजट में घोषणा होने के बाद अब यहां आसानी से बिजली घर का काम शुरू हो जाएगा। पीरपैंती में बनने वाला बिजली घर उन्नत तकनीक पर आधारित होगा।

बिहार के विकास में नया अध्याय जुड़ेगा : ऊर्जा मंत्री

राज्य के ऊर्जा मंत्री बिजेंद्र प्रसाद यादव ने मंगलवार को कहा कि वित्त मंत्री की घोषणा से बिहार के विकास में एक नया अध्याय जुड़ेगा। केंद्र सरकार ने अपने बजट में इस परियोजना के लिए 21,400 करोड़ की मंजूरी दी है। इससे पता चलता है कि बिहार के विकास को लेकर केंद्र सरकार कितनी गंभीर है। बिहार में उद्योग धंधों के विकास के लिए यह काफी महत्वपूर्ण साबित होगा। इस परियोजना से राज्य में अगले 15-20 वर्षों तक बिजली की आवश्यकता पूरी होती रहेगी।

उन्होंने कहा कि बिहार द्वारा प्रस्तावित इस पावर प्लांट का कुल बजट 20,000 करोड़ था जिसे बढ़ाकर 21,400 करोड़ कर दिया गया है। जानकारी के मुताबिक बिहार में अभी 7000 मेगावाट बिजली की आपूर्ति हो रही है। पीक आवर में यह मांग बढ़कर 7600 मेगावाट हो जाती है। पीरपैंती बिजली घर बनने से 2400 मेगावाट की जरूरत पूरी हो सकेगी। इससे बाजार से बिजली खरीदने पर निर्भरता कम होगी। हालांकि, अनुमान के मुताबिक अगले 10 साल के भीतर राज्य में बिजली की मांग बढ़कर 14 हजार मेगावाट हो जाएगी।

STONE CLINIC MOTIHARI

स्टोन क्लिनिक मोतिहारी

शास्त्री नगर, महिला कॉलेज रोड, मोतिहारी, बैंक रोड, राजेश्वरी पैलेस होटल के पूरब वाली गली में

तुरकौलिया की 09 महिलाओं ने कराया बंध्याकरण

- जनसंख्या स्थिरीकरण पखवाड़े के तहत हुआ यह बंध्याकरण
- जागरूकता से ही बढ़ती जनसंख्या पर रोक सम्भवः डीसीएम

बीएनएम। मोतिहारी

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र तुरकौलिया की 09 महिलाओं ने जनसंख्या स्थिरीकरण पखवाड़े के तहत बंध्याकरण कराया है। प्रखंड के बीसीएम विमलेंदु शेखर ने बताया की जिले के सभी 27 प्रखंडों में बढ़ती जनसंख्या के बारे में जागरूक करते हुए जनसंख्या स्थिरीकरण पखवाड़ा मनाया जा रहा है। पख़वाड़े के दौरान तुरकौलिया प्रखंड क्षेत्र में महिलाओं को बंध्याकरण व पुरुषों को नसबन्दी कराने के लिए आशा व अन्य स्वास्थ्य कर्मियों के द्वारा प्रेरित किया जा रहा है। सारथी रथ निकालकर माइकिंग कर गाँव-कस्बों में जागरूकता फैलाया जा रहा है जिसका परिणाम है कि निशा कुमारी सपही, राधा देवी बिजुलपुर, सरोज कुमारी कोटवा, संगीता कुमारी जयसिंहपुर व अन्य महिलाएँ सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र तुरकौलिया आकर सूर्या क्लीनिक के डॉ आर के वर्मा तथा डॉ नूतन सिन्हा द्वारा बंध्याकरण कराया गया। बीसीएम विमलेंदु शेखर ने बताया कि बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण के लिए परिवार नियोजन कराया जाना बेहद आवश्यक है। क्योंकि बड़े परिवार की अपेक्षा छोटा परिवार सुखी परिवार माना जाता है।

स्थायी समाधान के लिए आवश्यक है परिवार नियोजनः- तुरकौलिया के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. अर्जुन कुमार गुप्ता ने बताया कि परिवार नियोजन के स्थायी समाधान के लिए महिला या पुरुषों का बन्ध्याकरण कराया जाना जरूरी है। इसी को ध्यान में रखते हुए लगातार स्वास्थ्य विभाग की ओर से लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से जगह जगह पोस्टर, बैनर, प्रचार गाड़ी सोशल मीडिया के माध्यम से एवं आशा कार्यकर्ताओं के सहयोग से समय-समय पर अस्पतालों में बन्ध्याकरण कराने के लिए लोगों को प्रेरित किया जाता है। साथ ही बन्ध्याकरण कराने वाली महिला या पुरुषों को आर्थिक लाभ भी दिया जाता है।

जिले के कई सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में हो रहा बन्ध्याकरणः- डीसीएम नंदन झा ने बताया कि जिले के कई सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में महिलाओं का निःशुल्क बंध्याकरण किया जा रहा है। साथ ही महिला बंध्याकरण में लाभार्थियों को 2000 एवं पुरुष नसबंदी के लाभार्थियों को 3000 रुपए का आर्थिक सहायता दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि पुरुष नसबंदी एक आसान शल्यक्रिया है, पुरुषों को भी नसबंदी को आगे आना चाहिए।

मोतिहारी में दिनदहाड़े फ्लिपकार्ट कर्मी को गोली मारकर आठ लाख लूटा

बीएनएम। मोतिहारी

जिले में अपराध का ग्राफ लगातार बढ़ता जा रहा है. यहां बुधवार को बेखौफ अपराधियों ने जिला मुख्यालय मोतिहारी में दिनदहाड़े फ्लिपकार्ट कर्मी को गोली मार कर 8 लाख रुपए लूट लिये। घटना को अंजाम देने के बाद अपराधी फिल्मी स्टाइल में हथियार लहराते मौके से फरार हो गये। घायल कर्मी को अस्पताल में भर्ती कराया गया है,जहां उसकी स्थिति गंभीर बनी हुई है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर मामले की जांच में जुटी गई। घटना नगर थाना क्षेत्र के देवरहा बाबा मठ के समीप की बताई जा रही है। घटना के बाद पुलिस ने शहर की नाकेबंदी कर अपराधियों की तलाश शुरु कर दी। मिल रही जानकारी के अनुसार फ्लिपकार्ट कर्मी अजय कुमार कम्पनी से मेन ब्रांच में रुपया जमा करने जा रहा था। इसी दौरान एक बाइक पर सवार तीन अपराधियों ने हथियार के बल पर घटना को अंजाम दिया। शहर में दिनदहाड़े हुई लूट की घटना से आक्रोशित लोगों ने सड़क जाम कर जमकर बवाल किया। सड़क जाम होने से दोनों तरफ वाहनों की लंबी कतार लग गई। जख्मी युवक फिनो बैंक सीएसपी का संचालक भी बताया जा रहा है,जो लखौरा में सीएसपी संचालन करता है। इस संदर्भ में मोतिहारी सदर के एएसपी शिखर चौधरी ने बताया पुलिस इस मामले की कई बिंदुओ पर जांच कर रही है। पुलिस अधिकारियो का कहना है कि आखिर इतनी बड़ी रकम बिना किसी थाना को सूचित किये फ्लिपकार्ट का रुपया सीएसपी संचालक कैसे जमा करने जा रहा था। पुलिस का कहना है कि सभी एंगल से मामले की जांच की जा रही है।

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के 'दीक्षारम्भ' में मुख्य अतिथि होंगे बिहार के राज्यपाल

'दीक्षारम्भ' से शुरू होगा महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के नवागंतुक छात्र-छात्राओं का अभिप्रेरण कार्यक्रम

बीएनएम। मोतिहारी

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय में नए सत्र में प्रवेश प्राप्त किए छात्र-छात्राओं के लिए 'दीक्षारम्भ'' कार्यक्रम आगामी 13 अगस्त, 2024 को आयोजित किया जा रहा है । इस बहुप्रतीक्षित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बिहार के माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर जी की गरिमामयी उपस्थिति रहेगी । इस सम्बन्ध में विश्वविद्यालय प्रशासन को राज्यपाल सचिवालय की ओर से सहमति पत्र भी प्राप्त हो चुका है | यह कार्यक्रम मोतिहारी के राजा बाजार स्थित महात्मा गाँधी प्रेक्षागृह में आयोजित किया जायेगा | 'दीक्षारम्भ'' के आयोजन और उसमें मुख्य अतिथि के रूप में राज्यपाल के आगमन की सूचना से केन्द्रीय विश्वविद्यालय में उत्साह का माहौल है | यह दीक्षारंभ कार्यक्रम छात्र-छात्राओं के लिए विश्वविद्यालय में उनकी शैक्षणिक यात्रा के अभिप्रेरण कार्यक्रम की पहली कड़ी है |

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने बताया कि इस 'दीक्षारम्भ'' का उद्देश्य अपने विश्वविद्यालय के बारे में नव-प्रवेशी विद्यार्थियों को परिचित कराना तथा उन्हें यहाँ के शिक्षकों, अधिकारियों और अन्य गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों से जोड़ने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। कार्यक्रम का एक प्रमुख उद्देश्य यह भी है कि विश्वविद्यालय के विभिन्न परिसरों, उपलब्ध सुविधाओं, सहायता सेवाओं के साथ ही इसके शैक्षणिक-परिवेश और परिपाटी से छात्र-छात्राओं को परिचित कराना तथा विद्यार्थियों को सर्वांगीण एवं समग्र विकास के लिए उपलब्ध पाठ्यक्रम, सह-पाठ्यक्रम एवं पाठ्येतर आंतरिक एवं बाह्य स्रोतों की जानकारी देना है । इसके साथ ही छात्र-छात्राओं को विश्वविद्यालय की प्रमुख नीतियों, प्रक्रियाओं से अवगत कराना तथा यह समझाना की सफलतापूर्वक अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए उनसे क्या अपेक्षा की जाती है। नये छात्रों को नये वातावरण में समायोजित होने और सहज महसूस करने के साथ ही अन्य छात्रों और संकाय सदस्यों के साथ बेहतर तालमेल बनाने में दीक्षारम्भ कार्यक्रम की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। 'दीक्षारम्भ'' आत्म-जागरूकता और संवेदनशीलता, समानता, करुणा और एकता की भावना विकसित करने में भी सहायक होता है। उन्होंने कहा कि 'दीक्षारम्भ'' कार्यक्रम नव-प्रवेशी छात्र-छात्राओं को विश्वविद्यालय के समुदाय में समाहित करने और उनके शैक्षणिक सफलता की नींव रखने का एक महत्वपूर्ण चरण है। बिहार के माननीय राज्यपाल की उपस्थिति इस कार्यक्रम को और भी उत्साहवर्धक और प्रेरणादायक बना देगी, जिससे केन्द्रीय विश्वविद्यालय में नए छात्रों की इस अकादमिक-यात्रा की शानदार शुरुआत सुनिश्चित होगी।

जन-संपर्क प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. श्याम नंदन ने बताया कि यह कार्यक्रम नए छात्र-छात्राओं को महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के जीवंत शैक्षणिक वातावरण, मूल्य और संस्कृति से परिचित कराने के लिए शिक्षा मंत्रालय के निर्देशानुसार आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम नए छात्रों को विश्वविद्यालयी जीवन में सहजता से समायोजित होने में सहायता करेगा, जिससे वे केन्द्रीय विश्वविद्यालय के साथ आत्मीयता और सामुदायिक भावना का अनुभव करेंगे। इस कार्यक्रम में विभिन्न सत्रों और कार्यक्रमों के माध्यम से विश्वविद्यालय के विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों, पाठ्यक्रम से सम्बद्ध अन्य गतिविधियों और उपलब्ध सेवाओं आदि के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की जाएगी |

शांतिपूर्ण व स्वच्छ परीक्षा हो रही है संचालित- केंद्राधीक्षक

- चार वर्षीय यूजी सीबीसीएस सेकेंड सेमेस्टर की हो रही है परीक्षा
- परीक्षा केंद्र पर नकलचियों पर कसी गयी है नकेल

बीएनएम। मोतिहारी

शहर के एलएनडी कॉलेज परीक्षा केंद्र पर बुधवार को दूसरे दिन भी बीआरए बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के निर्देशानुसार सत्र 2023-27 के चार वर्षीय यूजी सीबीसीएस सेकेंड सेमेस्टर की परीक्षा शोरमुक्त व नकलमुक्त संचालित हुई। एलएनडी कॉलेज के केंद्राधीक्षक प्रो.(डॉ.) राजेश कुमार सिन्हा ने बताया कि इस केंद्र पर परीक्षा संबंधी मर्यादाओं के अनुकूल शांतिपूर्ण व स्वच्छ परीक्षा संचालित हो रही है। यह केंद्र नकलचियों पर नकेल कसने के लिए सदा प्रसिद्ध रहा है। इस केंद्र पर परीक्षार्थियों की सघन फ्रिसकिंग के उपरांत ही प्रवेश दिया जा रहा है। परीक्षा नियंत्रक डॉ. सर्वेश दूबे के अनुसार बुधवार को सत्र 2023-27 के चार वर्षीय यूजी सीबीसीएस सेकेंड सेमेस्टर के लिए प्रथम पाली में ग्रुप सी तथा द्वितीय पाली में ग्रुप डी के मेजर पत्रों की परीक्षा थी। प्रथम पाली की परीक्षा में कुल आवंटित 775 परीक्षार्थियों में 758 उपस्थित व 17 अनुपस्थित रहे। द्वितीय पाली की परीक्षा में कुल आवंटित 192 परीक्षार्थियों में 188 उपस्थित व 4 अनुपस्थित रहे। निष्कासित परीक्षार्थियों की कुल संख्या शून्य रही। संयुक्त केंद्राधीक्षक डॉ.कुमार राकेश रंजन ने बताया कि गुरुवार को प्रथम पाली में ग्रुप ई के वित्त एवं लेखांकन, अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, व उर्दू मेजर पत्र तथा द्वितीय पाली में ग्रुप एफ के गणित, भौतिकी व मनोविज्ञान मेजर पत्र की परीक्षा ली जाएगी। ज्ञात हो कि इस केंद्र पर डॉ. श्री कृष्ण सिन्हा महिला महाविद्यालय, मोतिहारी, मोतिहारी डिग्री इवनिंग कालेज एवं केएसआरएन एस कॉलेज केसरिया के परीक्षार्थियों का परीक्षा केंद्र निर्धारित किया गया है। जिला प्रशासन द्वारा प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी कमलेश कुमार सिंह व आरक्षक भी अपने कर्तव्य निर्वहन पर मुस्तैद रहे। इस परीक्षा के संचालन में डॉ. जौवाद हुसैन, डॉ.दीपक कुमार, डॉ.रविरंजन सिंह, डॉ.प्रभाकर कुमार, एनसीसी कैडेट्स बिट्टू कुमारी, प्रियांशु कुमारी आदि की महत्वपूर्ण भुमिका रही। वहीं शहर के भवानीपुर जिरात स्थित डॉ. श्री कृष्ण सिन्हा महिला महाविद्यालय की केंद्राधीक्षक प्रो.(डॉ.) किरण कुमारी ने बताया कि इस परीक्षा केन्द्र पर प्रथम पाली की परीक्षा में कुल आवंटित 701 परीक्षार्थियों में 693 उपस्थित व 08 अनुपस्थित रहे। द्वितीय पाली की परीक्षा में कुल आवंटित 554 परीक्षार्थियों में 543 उपस्थित व 11 अनुपस्थित रहे। निष्कासित परीक्षार्थियों की कुल संख्या शून्य रही। यहां जिला प्रशासन द्वारा प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी व आरक्षक अपने कर्तव्य निर्वहन पर मुस्तैद दिखे।

पौधारोपण कर पर्यावरण का करें संरक्षण, बढ़ेगी हरियाली- नरेश ठाकुर

- पेड़-पौधे के बिना जीवन की परिकल्पना हम नहीं कर सकते।
- बेहतर जीवन के लिए हरियाली है जरुरी
- पर्यावरण को सुंदर व स्वस्थ बनाए रखने के लिए करें पौधारोपण

बीएनएम। मोतिहारी

शहर के भवानीपुर जिरात स्थित सेन्ट आरसेटी (ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान) परिसर में बुधवार को सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के क्षेत्रीय प्रमुख नरेश ठाकुर के द्वारा हरित धरा (माँ के लिए वृक्ष) के तहत आम एवं अमरुद का फलदार पाँच पौधा लगाया गया। वृक्षा रोपण के पश्चात आरएम श्री ठाकुर ने बताया कि पौधा रोपण कर हरियाली को बढ़ाया जा सकता है। इससे पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है। कहा कि पेड़-पौधों के बिना जीवन की परिकल्पना नहीं की जा सकती है। यदि पेड़-पौधे नहीं होंगे तो हम सांस नहीं ले सकते। इसलिए बेहतर जीवन के लिए हमसबों को पौधा लगाने व उन्हें बचाने का संकल्प लेना चाहिए। कहा कि पर्यावरणीय संतुलन के प्रति चल रही प्रतिबद्धता के हिस्से के रुप में भारत सरकार द्वारा यह अभियान चलाया जा रहा है। इसका उदेश्य है कि हमारे समुदाय के आसपास हरित आवरण को बढ़ाना और पर्यावरण में सकारात्मक योगदान

देना है। उन्होने इस नेक कार्य में सभी कर्मचारियों के भागीदारी की सराहना की। मानसून के प्रारंभिक चरण के दरम्यान प्रत्येक शाखा को कम से कम पाँच पेड़ लगाने हेतु प्रोत्साहित किया। कहा कि यह न केवल प्रकृति को वापस लौटाने का अवसर है बल्कि हमारे संगठन के भीतर टीम वर्क और समुदाय की भावना को बढ़ावा देने का भी अवसर है।उन्होने बकरी पालन की चल रही प्रशिक्षणार्थियों से कहा कि आपसभी अपने-अपने क्षेत्र में कम से कम पांच पेड़ अवश्य लगाएं। उक्त मौके पर आरएम नरेश ठाकुर, एलडीएम गोपाल प्रसाद, सेन्ट आरसेटी निदेशक संजय कुमार झा, मुख्य प्रबंधक राजेन्द्र पाण्डेय सहित सेन्ट आरसेटी के सभी कर्मी उपस्थित रहे।

MADAN RAJ NURSING HOME
HOSPITAL ROAD MOTIHARI, (BIHAR)
Contact No.- 9801637890, 6200480505, 9113274254

15 अगस्त तक डब्ल्यूपीयू निर्माण कार्य को धरातल पर उतारने का रखें लक्ष्य : जिलाधिकारी

- यूजर चार्जेज कलेक्शन हेतु ग्रामीणों को प्रेरित करें पंचायतों के जनप्रतिनधि
- पंचायतों के सर्वांगीण विकास हेतु मिलजुल करें कार्य
- जिलाधिकारी की अध्यक्षता में प्रखंड सभागार मझौलिया में समीक्षात्मक बैठक सम्पन्न

बीएनएम। बेतिया

पंचायतों में तेजी के साथ विकासात्मक एवं कल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए आज प्रखंड सभागार मझौलिया में जिला पदाधिकारी, दिनेश कुमार राय की अध्यक्षता में समीक्षात्मक बैठक सम्पन्न हुयी। इस बैठक में जिलास्तरीय पदाधिकारी, प्रखंडस्तरीय पदाधिकारी, माननीय जनप्रतिनिधिगण एवं अन्य अधिकारी एवं कर्मी सम्मिलित हुए। जिलाधिकारी ने लगभग 21 पंचायतों के प्रतिनिधियों से बात करते हुए उनसे उनकी पंचायतों में हो रहे विकास कार्यों का हाल जाना। पंचायत प्रतिनिधियों से बात करते हुए उन्होंने विकास कार्यों में हो रही दिक्कतों के बारे पूछा। कौन सा कारण है जिसकी वजह से मझौलिया प्रखंड के बारह पंचायतों में विकास कार्य धीरे हैं इसके बारे में गहन पड़ताल की। अधिकारियों के साथ ही जन प्रतिनिधियों से उन्होंने जोर देकर कहा कि विकास कार्यों में तेजी लायी जाए। कार्यों को गति प्रदान करना सबकी जिम्मेवारी है। जन प्रतिनिधियों से व्यक्तिगत तौर पर उन्होंने पूछा कि बताइए कि काम कब तक पूरा होगा। साथ ही उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि पंद्रह अगस्त तक डब्ल्यूपीयू निर्माण कार्य को धरातल पर पूरा करने का लक्ष्य रखें।जिलाधिकारी ने कहा कि विकास कार्यों को तीव्र गति से क्रियान्वित करने एवं धरातल पर उतारने के लिए जनप्रतिनिधिगण सहयोग करें। पंचायत को बेहतर बनाने के लिए मिलजुल कर कार्य करें। ससमय विकास कार्यों को धरातल पर उतारे ताकि आमजन लाभान्वित हो सके। अपूर्ण योजनाओं को तीव्र गति से निष्पक्षता के साथ पूर्ण कराएं। विकास कार्यों के महत्व पर जोर देते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि इसे अपना काम समझकर करें तब ही समय पर पूरा होगा। जिला प्रशासन हमेशा आप लोगों के साथ समन्वय करने के लिए तैयार है। जन प्रतिनिधियों के बीच उन्होंने यह भी बताया कि बहुत सारी नई योजनाएं भी अभी आने वाली है जो आप लोगों के ही पूरा करना है। जिलाधिकारी ने यह भी कहा कि किसी के प्रति कोई द्वेष भावना नहीं है। काम करना ही लक्ष्य है। डब्ल्यूपीयू निर्माण हेतु परसा पंचायत की ज़मीन के मामले को भी उन्होंने गौर से जाना और उसे जल्दी हल करने के लिए निर्देशित किया। जन प्रतिनिधियों को प्रेरित करते हुए उन्होंने कहा कि अच्छे से काम करके आप लोग उदाहरण बन सकते हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों में काम करना ही चुनौती है। विकास तभी हो सकता है जब आप लोग का

सहयोग पूरी तरह प्रशासन को मिलेगा। समीक्षा बैठक में पंचायतों में संचालित विभिन्न विकासात्मक एवं कल्याणकारी योजनाओं की कार्य प्रगति की समीक्षा की गयी। इस दौरान डब्लयूपीयू निर्माण पर विशेष बल दिया गया। जौकटिया पंचायत के मुखिया द्वारा बताया गया कि 2-3 दिन में निर्माण कार्य पूर्ण हो जायेगा। सेनुवरिया मुखिया द्वारा बताया गया ले आउट तैयार हो गया है। रामनगर बनकट के मुखिया प्रतिनिधि द्वारा बताया गया कि कल से कार्य शुरू हो जायेगा। राजाभार, करमवां, बहुअरवा पंचायत के प्रतिनिधियों द्वारा बताया गया कि कार्य शुरू हो गया है, जल्द पूर्ण करा लिया जायेगा। परसा पंचायत के पंचायत प्रतिनिधि द्वारा बताया गया कि डब्ल्यूपीयू निर्माण हेतु चिन्हित जमीन का किसी के द्वारा अतिक्रमण कर लिया गया है। इसे जिलाधिकारी ने गंभीरता से लेते हुए प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं अंचल अधिकारी को निर्देश दिया कि शीघ्र उक्त जमीन को अतिक्रमणमुक्त कराया जाय और डब्ल्यूपीयू का निर्माण कार्य प्रारंभ कराया जाय। जिलाधिकारी ने पंचायत प्रतिनिधियों से कहा कि गांवों को स्वच्छ रखने के लिए डब्ल्यूपीयू का निर्माण कराया जा रहा है। गांव के घर-घर से कचरा कलेक्शन का उसका निस्तारण डब्ल्यूपीयू में कराया जायेगा। कचरा कलेक्शन हेतु प्रति परिवार प्रतिदिन मात्र एक रूपया यूजर चार्जेज सरकार द्वारा निर्धारित किया गया है। यूजर चार्जेज कलेक्शन के लिए ग्रामीणों को प्रेरित करने में पंचायत के मुखिया सहयोग करें। कार्यपालक अभियंता, पीएचईडी द्वारा मझौलिया प्रखंड में किये जा रहे कार्यों की विस्तृत जानकारी दी गयी। उन्होंने अपना तथा अपने एसडीओ का नंबर सार्वजनिक किया ताकि नल-जल योजना एवं चापाकल नियमित रूप से फंक्शनल रह सके। जिलाधिकारी द्वारा कार्यालय अभियंता, पीएचईडी को निर्देश दिया गया कि कार्यालय में एक पंजी का संधारण किया जाय जिसमें एक-एक शिकायत को अंकित किया जाय। प्राप्त शिकायत पर विभाग द्वारा क्या कार्रवाई की गयी, इसे भी अंकित किया जाय। उप विकास आयुक्त प्रतिभा रानी ने जन प्रतिनिधियों का ध्यान गंदगी की ओर दिलाया। साफ़ सफ़ाई अपनाने पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि गंदगी की वजह से ही कई तरह की समस्या समाज में उठ खड़ी हुई है। बच्चों की लंबाई घट रही है। पर्यावरण में असंतुलन जो हो रहा है उसकी बड़ी वजह गंदगी है। उन्होंने जन प्रतिनिधियों से अपील किया की स्वच्छता के कार्यक्रम को बढ़ाइए। पंचायत सचिवों को दिशा-निर्देश दिया की उपयोगिता प्रमाण पत्र जल्दी से जमा करें। इस अवसर पर उप विकास आयुक्त प्रतिभा रानी अनुमंडल पदाधिकारी, बेतिया सदर विनोद कुमार, विशेष कार्य पदाधिकारी, जिला गोपनीय शाखा सुजीत कुमार, प्रशिक्षु सहायक निदेशक-सह-जिला जनसम्पर्क पदाधिकारी अजय कुमार सिंह, प्रखंड विकास पदाधिकारी वरूण केतन सहित अन्य अधिकारीगण एवं माननीय जनप्रतिनिधिगण उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

अनुमंडल कार्यालय का जिलाधिकारी ने किया निरीक्षण

बीएनएम। रक्सौल। बुधवार को जिलाधिकारी सौरभ जोरवाल द्वारा रक्सौल अनुमंडल कार्यालय का निरीक्षण किया गया। साथ ही निरीक्षण के क्रम में कार्यालय प्रबंधन तथा साफ सफाई का जायजा लिया गया तथा आवश्यक दिशा निर्देश भी दिया है। जिलाधिकारी द्वारा रक्सौल हवाई अड्डे के लिए चिन्हित भूमि को भी देखा गया, साथ ही रक्सौल अनुमंडल पदाधिकारी प्रशिक्षु आईएएस शिवाक्षी दीक्षित, अंचलाधिकारी व भूमि सुधार उप समाहर्ता को हवाई अड्डे से संबंधित भू मापी, तथा दाखिल खारिज जल्द पूर्ण करने के दिशा निर्देश दिए गए।अनुमंडल कार्यालय में संचालित सभी कार्यालयों का निरीक्षण किया गया। साथ ही साफ सफाई और रोक पंजी का निरीक्षण किया गया। मौके पर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी धीरेंद्र कुमार व अन्य मौजूद रहे।

वारंटी गिरफ्तार, भेजा गया जेल

बीएनएम। हरसिद्धि। थाना क्षेत्र के मुरारपुर पंचायत के जैल मुरारपुर से स्थानीय पुलिस ने छापेमारी कर वारंटी अध्या महतो पिता स्वर्गीय विक्रमा महतो कांड संख्या 16/23 मद्धनिषेध में गिरफ्तार किया। पुष्टि करते हुए इंस्पेक्टर निर्भय कुमार राय ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी की गई है। छापेमारी में उमेश पासवान, विभा भारती, अनिल सिंह इत्यादि शामिल थे। पूछताछ के बाद न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

मुख्यमंत्री प्रखंड परिवहन योजना अंतर्गत अनुदान आधारित बस खरीद के लिए 1 अगस्त से 25 अगस्त तक होगा आवेदन

बीएनएम। मोतिहारी। जिला परिवहन पदाधिकारी निवेदिता कुमारी ने बताया कि जिला के प्रखंडों (सदर प्रखंड को छोड़कर) एवं सुदूर पंचायतों को जिला मुख्यालय से जोड़ने एवं आमजनों को परिवहन की सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री प्रखंड परिवहन योजना के दूसरे चरण की शुरुआत की जा रही है। इस चरण में प्रखंडवार आवेदन देने की तिथि 1 अगस्त से 25 अगस्त तक निर्धारित की गई है। इस योजना अंतर्गत प्रत्येक प्रखंड में अधिकतम सात लाभुकों को बस के क्रय पर अनुदान दिया जायेगा। इस योजना अंतर्गत प्रति बस 5 लाख रुपए के अनुदान का भुगतान जिला परिवहन पदाधिकारी के द्वारा सीएफएमएस के माध्यम से लाभुक के खाते में किया जाएगा। जिला परिवहन पदाधिकारी के द्वारा बताया गया है कि मुख्यमंत्री प्रखंड परिवहन योजना अंतर्गत एक प्रखंड में दो अनुसूचित जाति, दो अत्यंत पिछड़ा वर्ग, एक पिछड़ा वर्ग, एक अल्पसंख्यक समुदाय एवं एक सामान्य वर्ग के लाभुक इस योजना का लाभ उठा सकते हैं। परंतु जिस प्रखंड में अनुसूचित जनजाति की संख्या 1000 से ज्यादा होगी उस प्रखंड में एक अतिरिक्त अनुसूचित जनजाति की कोटि में भी योजना का लाभ दिया जाएगा। मुख्यमंत्री प्रखंड परिवहन योजना अंतर्गत प्रखंड में आवेदन देने की तिथि 01.08.2024 से 25.08.2024 तक निर्धारित की गई है। प्राप्त आवेदनों के आधार पर प्रखंडवार एवं कोटिवार वरीयता सूची का निर्धारण एवं लाभुकों का चयन किया जाएगा। डीटीओ ने कहा कि प्रखंड विकास पदाधिकारी के सहयोग से प्रखंड स्तर पर बसों के क्रय हेतु आमजनों के बीच जागरूकता लाने के उद्देश्य से वाहन मेला का आयोजन कराया जाएगा जिसमें अधिकृत बस डीलर, बैंक एवं वित्तीय संस्थान के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहेंगे जिससे कि लाभुकों को वाहन के चयन और उसके वित्त पोषण कार्य में सहजता आएगी।

युवती को बहलाफुसला ले गया था तमिलनाडु, अब हो गया गिरफ्तार

बीएनएम। रक्सौल

एएचटीयू टीम के पूर्व प्रभारी इन्स्पेक्टर मनोज कुमार शर्मा भले ही रक्सौल से असम स्थानांतरित हो गए हैं किन्तु जिनकी नाबालिग बच्चियाँ अपराधियों के बहकावे में आकार घर से भाग जा रही हैं वो लोग अभी भी उनको पत्र लिख कर अपनी बच्चियों को अपराधियों की चुंगल से बचाने की गुहार लगाते रहते हैं। अभी एक मामला उनके पास पत्र द्वारा असम तक पहुंचा था कि मोहम्मद शमशेर खान वालिद मोहम्मद मुहउद्दीन खान जो कि वार्ड संख्या 06 खाजुरीबाड़ी हरीपुर अररिया बिहार 854328 का रहने वाला है। उसकी पहली बीवी है उससे तीन बच्चे हैं फिर उससे जब दिल भर गया तब एक दूसरी महिला को वहाँ से बहला फुसला कर भगा कर रक्सौल ले आया। रक्सौल क्षेत्र में पहुँच कर एक व्यापारी के यहाँ काम करने करने लगा अब इस व्यापारी कि लड़की अंजली कुमारी के ऊपर भी इसकी नियत खराब हो गई जो कि अभी सिर्फ 8वीं कक्षा में ही पढ़ रही थी। एक दिन मौका पा कर व्यापारी की दूकान से रुपये चोरी के साथ ही नाबालिग लड़की को भगा कर तमिलनाडु ले गया और इसके बाद सबसे पहले अपने फेसबूक पर नाबालिग लड़की अंजली कुमारी की बुर्का पहना कर फोटो भी अपलोड कर दी। सामाजिक कार्यकर्ता दिग्विजय पार्थ के सहयोग से व नाबालिग लड़की के पिता कि ओर से इस संदर्भ में पुलिस के पास एफआईआर भी अंकित कराई गई। फिर माता पिता को लड़की को लेकर किसी अनहोनी की आशंका हुई तो उन्होंने एएचटीयू टीम के पूर्व प्रभारी इन्स्पेक्टर मनोज कुमार शर्मा को पत्र लिखा। इसके पश्चात इंस्पेक्टर मनोज कुमार शर्मा ने उस पर कार्यवाही प्रारंभ कर दी और अपराधी मोहम्मद शमशेर खान की लोकेशन ट्रेक कारवाई जो कि तमिलनाडु में दिख रहा था किन्तु लोकेशन की ग्रेडिंग सही नहीं होने से उस तक नहीं पहुंचा जा सकता था। इसके साथ ही प्रियांक कानूनगो अध्यक्ष राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण (एनसीपीसीआर) भारत सरकार नई दिल्ली, इन्स्पेक्टर मनोज कुमार शर्मा क्षेत्रक मुख्यालय, एस.एस.बी बेजपारा मँगलदोई (असम) और डाइरेक्टर वीरेंद्र कुमार सिंह मिशन मुक्ति फाउंडेशन नई दिल्ली ने मिलकर "आउटस्ट्रेचड आर्म्स" (Outstretched Arms) नामक रेस्क्यू ऑपरेशन लॉन्च किया। मोहम्मद शमशेर खान को लगातार एक सप्ताह से ट्रैक करते रहे चूंकि पिन पॉइंट लोकेशन नहीं मिल पा रही थी तो इसको तमिलनाडु में गिरफ्तार नहीं किया जा सका। कुछ दिन बाद इसकी जानकारी मिली कि मुजफ्फरपुर में है, एसएसपी पुलिस मुजफ्फरपुर को आयोग की तरफ से दिशा निर्देश तथा इसकी लोकेशन भी दी गई । फिर इसकी खोजबीन वहाँ होती रही फिर ये वहाँ से भी बच निकला। फिर इसकी लोकेशन की जानकारी सीतामढ़ी में मिली अतः आयोग द्वारा पुपरी थाना सीतामढ़ी बिहार को दिशा निर्देश तथा इसकी लोकेशन भी दी गई। फिर वहाँ भी इसकी खोजबीन शुरू हो गई कि इसे पुपरी थाना सीतामढ़ी बिहार द्वारा दबोच लिया गया। लड़की ने अपने व्यान मे कहा कि उसे इस्लाम मजहब के अनुसार बुर्का परिधान पहनाया गया उसे कोई जानकारी नही कि उसके साथ क्या हुआ? अब पुलिस की अग्रिम जाँच मे और जानकारी निकलेगी। कौड़ीहार चौक के पास रहने वाली मोहम्मद शमशेर खान दूसरी बेगम से कुछ लोगों की बातचीत हुई तब उसकी दूसरी बेगम ने बताया कि जब मोहम्मद शमशेर खान से मुलाकात हुई तो उसने कोई ऐसा पदार्थ धोके से खिला दिया जिसके कारण उसे मोहम्मद शमशेर खान ही सबकुछ दिखता था एक दो हफ्ते बाद उसे होश आया तब वो खूब रोई थी किन्तु सब ओर से निराश हो कर फिर उसके साथ ही रहने लगी। अब ये जांच का विषय है कि ऐसा क्या है कि किसी भी उम्र के लोग अपने से बहुत छोटी नाबालिग लड़कियों को बहला फुसला कर भगा ले जा रहे हैं।

यूवक की हत्या कर गांव के बीच नहर पुल से पुलिस ने शव की बरामद

सिरसिया थाने की है घटना, परिजनों ने लगाया साजिश के हत्या का आरोप

बीएनएम। चनपटिया

सिरसिया पुलिस ने बुधवार अल्हे सूबह सेवा निवृत्त आर्मी जटाशंकर राय के बड़े पुत्र पवन कुमार राय 40बर्ष का शव मिलते ही घर व गांव में कोहराम मच गया।सिरिसिया विश्वास मुख्य मार्ग सिरिसिया विश्वास नहर के पुल के समीप पुलिस ने एक युवक का शव बरामद किया हैं । मृत युवक की पहचान सिरिसिया गांव निवासी जटा शंकर राय के पुत्र पवन कुमार राय लगभग(40) के रुप में कि गई हैं। जिसके गले पर निशान एवं पैर पर चोट लगने के निशान है। घटना की खबर ग्रामीण ने पुलिस को दी सूचना मिलते घटनास्थल पर पहुंची सिरिसिया थाने की पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जीएमसीएच बेतिया पोस्टमार्टम कराने के बाद मृतक के शव को स्वजनों को सौप दिया है । हलांकी घटना अस्पष्ट नहीं हो रहा है । मृतक के पिता सेवानिवृत फौजी है।मृतक दो भाइयों बड़ा एवं उसके दो पुत्री व एक पुत्र हैं ।मृतक पिता जटाशंकर राय ने बताया कि मोबाइल को लेकर शुबह मंगलवार को गांव के ही एक यूवक झगड़ा हुआ था। जिसमें उसने पवन को अंजाम भुगतने की धमकी दी। देर रात उसकी रहस्यमय परिस्थितियों में उसकी हत्या हो गई। जबकि मृतक की पत्नी वीणा देवी ने बताया कि मेरे पति गांव के ही एक युवक को कुछ माह पहले पैयचा पैसे दे रखे थे। उन्हें बाबाधाम जाने के तैयारी की बात कह कर उनसे पैसे लेने गए थे। जहां एक सोची-समझी रणनीति के तहत उसे शराब पिलाकर हत्या कर दी गई है। ग्रामीण सूत्रों के अनुसार जहां से पवन का शव बरामद किया गया है वहां देर रात बड़े ही संख्या में लोगों ने झारे व ठकरा खेल रहे थे। लेकिन वहां के एक भी लोग घटित घटना के की न तो परिजनों नहीं पुलिस को दी। ऐसे पवन की हत्या के संदर्भ में की सवालों का जन्म दे रही। बरहाल पुलिस पवन की मोबाइल को ढुढने में जुटी है।

एसडीओ ने हरसिद्धि सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र का किया निरीक्षण

बीएनएम। हरसिद्धि

अरेराज अनुमंडल पदाधिकारी अरुण कुमार ने बुधवार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र हरसिद्धि का औचक निरीक्षण किया। एसडीओ ने अस्पताल के प्रभारी के कक्ष में बैठकर जांच किया, स्वास्थ्य प्रभारी सुनील कुमार के द्वारा दिए गए सभी का कागजातो का अवलोकन करते हुए उन्होंने रजिस्टर पंजी में कई अनियमितता देखे।।जिस पर स्वास्थ्य प्रभारी सुनील कुमार को चेताया कि आप रजिस्टर को ठीक-ठाक करें नहीं तो आप कार्रवाई के जद में आ जाएंगे। उन्होंने सभी डॉक्टरों से निर्देश देते हुए कहा कि आप सभी लोग सही समय पर उपस्थित होकर मरीज का चेकअप करें और उचित सुविधा प्रदान करें। उन्होंने स्वास्थ्य प्रभारी को चेताया कि सही समय पर उपस्थित होकर अस्पताल प्रबंधन का साफ सफाई के साथ रोकड़ पंजी भी चुस्त दुरुस्त होनी चाहिए। उन्होंने बारी बारी से सभी स्वास्थ्य कर्मियों को बुलाकर उनके समस्याओं के बारे में सुना और समस्या के समाधान बताया। वही अस्पताल में रोगी हित में शौचालय घर निर्माण तथा शुद्ध पेयजल परिसर से जल निकासी व साफ सफाई आदि स्वास्थ्य प्रबंधक से आवश्यक जानकारी प्राप्त की तथा निदान के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिया। वहीं एसडीओ अरुण कुमार के द्वारा बताया गया कि रोगियों को बेहतर सुविधाएं मुहैया कराने के लिए बहुत सारे बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा किया। उसके बाद एसडीओ ने अस्पताल के कई कर्मचारी साथ परिसर का भ्रमण किया साथ ही अस्पताल भवन के प्रवेश द्वार पर लगे जल जमाव को गम्भीरता से लिया तथा निजात दिलाने के लिए निर्देश दिया। वही एसडीओ श्री कुमार ने गुणवत्ता को लेकर स्वास्थ्य प्रबंधक से जानकारी प्राप्त की।

CENTER CODE- BR-12870035
SAKSHI COMPUTER INSTITUTE
भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थान
A UNIT OF BDS COMPUTER PVT. LTD.
A RIGHT PLACE FOR YOUR STUNING PERSONALITY
COME AND LEARN COMPUTER WITH US
Tally Prime
ADCA DCA CCC
COMPUTER BASIC
ADVANCE EXCEL
YADOPUR ROAD, HARSIDHI, EAST CHAMPARAN
9470050309 RAKESH KUMAR bdscomputer.in

चिंतन मनन

उपयोगी हल

एक बार की बात है एक राजा था। उसका एक बड़ा-सा राज्य था।एक दिन उसे देश घूमने का विचार आया और उसने देश भ्रमण की योजना बनाई और घूमने निकल पड़ा। जब वह यात्रा से लौट कर अपने महल आया। उसने अपने मंत्रियों से पैरों में दर्द होने की शिकायत की। राजा का कहना था कि मार्ग में जो कंकड़ पत्थर थे वे मेरे पैरों में चुभ गए और इसके लिए कुछ इंतजाम करना चाहिए। कुछ देर विचार करने के बाद उसने अपने सैनिकों व मंत्रियों को आदेश दिया कि देश की संपूर्ण सड़कें चमड़े से ढंक दी जाएं। राजा का ऐसा आदेश सुनकर सब सकते में आ गए। लेकिन किसी ने भी मना करने की हिम्मत नहीं दिखाई। यह तो निश्चित ही था कि इस काम के लिए बहुत सारे रुपए की जरूरत थी। लेकिन फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा। कुछ देर बाद राजा के एक बुद्धिमान मंत्री ने एक युक्ति निकाली। उसने राजा के पास जाकर डरते हुए कहा कि मैं आपको एक सुझाव देना चाहता हूँ। अगर आप इतने रुपयों को अनावश्यक रूप से बर्बाद न करना चाहें तो एक अच्छी तरकीब मेरे पास है। जिससे आपका काम भी हो जाएगा और अनावश्यक रुपयों की बर्बादी भी बच जाएगी। राजा आश्चर्यचकित था क्योंकि पहली बार किसी ने उसकी आज्ञा न मानने की बात कही थी। उसने कहा बताओ क्या सुझाव है। मंत्री ने कहा कि पूरे देश की सड़कों को चमड़े से ढंकने के बजाय आप चमड़े के एक टुकड़े का उपयोग कर अपने पैरों को ही क्यों नहीं ढंक लेते। राजा ने अचरज की दृष्टि से मंत्री को देखा और उसके सुझाव को मानते हुए अपने लिए जूता बनवाने का आदेश दे दिया। यह कहानी हमें एक महत्वपूर्ण पाठ सिखाती है कि हमेशा ऐसे हल के बारे में सोचना चाहिए जो ज्यादा उपयोगी हो। जल्दबाजी में अप्रायोगिक हल सोचना बुद्धिमानी नहीं है। दूसरों के साथ बातचीत से भी अच्छे हल निकाले जा सकते हैं।

नमो बजट - विकसित भारत 2047 की संकल्पना

सत्येंद्र जैन

भाजपा की मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का पहला आम बजट वर्ष 2024- 25 संसद के पटल पर प्रस्तुत किया गया है।यह बजट विकसित भारत के ऊषा काल का बजट है।वर्ष 2047 तक भारत विकसित राष्ट्र हो जाएगा। वर्तमान में भारत विश्व में पांचवी आर्थिक शक्ति संपन्न देश है। भारत आगामी दो-तीन वर्ष में विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन जाएगा।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और वित्तमंत्री निर्मला सीतारमन के कुशल वित्तीय सुप्रबंधन का सुफल है कि यह सर्व समावेशी बजट है ।भारत के इंफ्रास्ट्रक्चर,निवेश को बढ़ाने के साथ-साथ सभी के लिए लोक मंगलकारी बजट है।मोदी सरकार ने देश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया है। 48.21 लाख करोड़ रुपये से अधिक का बजट प्रस्तुत किया है।जो पिछले दस सालों में लगभग चौगुना हो गया है। बजट में यह चमत्कारिक वृद्धि भाजपा की मोदी सरकार के उत्तरोत्तर विकास को दर्शाती है।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भागीरथी परिश्रम,अर्थशास्त्रीय सुधारों के कारण दस वर्ष में ही भारत की जीडीपी ,सकल घरेलू उत्पाद भी लगभग तीन गुना बढ़ा है।अंतरिम बजट प्रस्तुति के समय भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सुयोग्य वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन ने चुनावी वर्ष होने के उपरांत भी पूंजीगत व्यय को पिछले वर्ष से बढ़कर 11.1111 लाख करोड़ रुपए से अधिक किया है।अधो सरंचना विकास में सरकार पिछले वर्ष की तुलना में 11.11 प्रतिशत अधिक राशि व्यय करने जा रही है। यह देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 3.4 प्रतिशत है।यह मोदी सरकार का साहस है जो चुनावी वर्ष होते हुए इंफ्रास्ट्रक्चर पर पहले अंतरिम बजट और अभी आम बजट में सर्वाधिक धनराशि व्यय कर रही है।यही कारण है कि देश की जनता ने मोदी सरकार को विजय श्री का आशीर्वाद दिया। एनडीए की सरकार तीसरी बार बनी है। अधिक पूंजीगत व्यय से ही भारत का वास्तविक, शाश्वत विकास संभव है।रोजगार के असंख्य अवसर उपलब्ध होते हैं।यह बजट गरीबों,युवाओं, किसानों, महिलाओं और मध्यम वर्ग के कल्याण के लिए समर्पित है।सर्व समावेशी बजट प्रस्तुत करने हेतु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण का अभिनंदन है।यह आम बजट निश्चित ही विकसित भारत की संकल्पना को सिद्ध करेगा। इस बजट में राजस्व सहित कुल प्राप्तियों का अनुमान 32.07 लाख करोड़ रुपए है।सकल कर प्राप्तियां 25.83 लाख करोड़ रुपए है। राजकोषीय घाटा जीडीपी के सापेक्ष 4.9 प्रतिशत रहने का अनुमान है। सरकार का लक्ष्य अगले वित्तीय वर्ष में 4.5 प्रतिशत रखना है।अर्थव्यवस्था की आशा से अधिक विकास दर 8.2 प्रतिशत प्राप्त होने से संभव हुआ है। मुद्रा स्फीति 4.56 प्रतिशत रही है।अगले वित्त वर्ष में 4 प्रतिशत से कम लाने का लक्ष्य है।खाद्य और ईंधन को छोड़कर कोर मुद्रा स्फीति 3.1 प्रतिशत रही है।इस बजट में रोजगार कौशल एमएसएमई और मध्यम वर्ग पर विशेष ध्यान सरकार ने दिया है।

प्राथमिकता 1- कृषि में उत्पादकता और अनुकूलता- कृषि क्षेत्र एवं कृषक कल्याण के लिए मोदी सरकार प्रतिबद्ध है। कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान अनंत ऊर्जा के साथ अखंड प्रचंड पुरुषार्थ कर रहे हैं ।कृषि और कृषि से संबंधित क्षेत्रों लिए 1.52 लाख करोड रुपए का आवंटन किया गया है। किसानों को खेती-बाड़ी के लिए 32 कृषि और बागवानी फसलों की नई 109 उच्च पैदावार वाली जलवायु के अनुकूल किस्मों को जारी किया जाएगा। प्राकृतिक कृषि से जोड़ने के लिए किसानों को प्रमाण पत्र और ब्रांडिंग व्यवस्था की जाएगी। अगले 2 वर्षों में पूरे देश में एक करोड़ से किसानों को प्राकृतिक कृषि से जोड़ा जाएगा। उनको प्रमाण पत्र दिया जाएगा।प्राकृतिक खेती के लिए 10000 आवश्यकता आधारित जैव आदान संसाधन केंद्र स्थापित भी किए जाएंगे।3 साल में किसानों और उनकी जमीन को शामिल करने हेतु कृषि में डिजिटल सार्वजनिक अधोसंरचना,डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर को लागू किया जाएगा।

प्राथमिकता 2- रोजगार और कौशल प्रशिक्षण- रोजगार और कौशल पर मोदी की गारन्टी है। पांच योजनाओं के द्वारा 4.1 करोड़ युवाओं के लिए 5 साल में रोजगार कौशल और अन्य अवसरों के लिए पहल की गई है।2 लाख करोड रुपए से अधिक राशि सरकार व्यय करेगी। पहली योजना में ईपीएफओ में पंजीकृत पहली बार रोजगार पाने वाले कर्मचारियों को 15000 तक के एक महीने का वेतन जिसे तीन किस्तों में युवाओं को दिया जाएगा।दूसरी योजना के अनुसार कर्मचारियों और नियोक्ता दोनों को सीधे विनिर्दिष्ट स्केल पर प्रोत्साहन राशि उपलब्ध कराना है ।नौकरी के पहले 4 साल में दोनों के ईपीएफओ के योगदान पर निर्भर है।तीसरी योजना के अनुसार सरकार नियोक्ता को उसके ईपीएफओ योगदान के लिए 2 साल तक हर अतिरिक्त कर्मचारी पर 3000 रुपए प्रतिमाह भुगतान करेगी।चौथी योजना अनुसार कौशल के लिए नई केंद्र प्रायोजित योजना अगले 5 साल की अवधि में 20 लाख युवाओं को कौशल बढ़ाया जाएगा।1000 औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों का उन्नयन किया जाएगा।पांचवी योजना अनुसार 5 साल में एक करोड़ युवाओं को 500 शीर्ष कंपनियों मे इंटर्नशिप दी जाएगी।7.5 लाख रुपए तक के ऋण सुविधा उपलब्ध कराने हेतु मॉडल कौशल ऋण योजना और सरकार की योजना के तहत किसी भी योजना के लाभ के लिए पात्र नहीं होने वाले युवाओं को घरेलू संस्थानों में उच्चतर शिक्षा के लिए 10 लाख रुपए तक के ऋण हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करने का प्रावधान बजट में किया गया है। कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए, औद्योगिक सहयोग से महिला छात्रावास की स्थापना करना, महिला केंद्रित कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना और महिला स्वयं सहायता समूह उद्यम उत्पादों को बाजार तक बढ़ाने के लिए भाजपा सरकार ने बजट प्रावधान किया है।

प्राथमिकता 3- समावेशी मानव संसाधन विकास और सामाजिक न्याय- पूर्वोदय अमृतसर कोलकाता औद्योगिक गलियारे के साथ गया में औद्योगिक केंद्र का विकास।बिहार के लिए 21400 करोड रुपए की लागत से विद्युत परियोजनाएं आरंभ की जाएगी 2400 मेगावाट का पिरपैंती में नया विद्युत संयंत्र भी सम्मिलित है। आंध्र प्रदेश के लिए मौजूदा वित्त वर्ष में 15000 करोड रुपए की विशेष वित्तीय सहायता मोदी सरकार दे रही है।विशाखापट्टनम-चेन्नई और हैदराबाद-बेंगलुरु औद्योगिक गलियारे में औद्योगिक केंद्र स्थापित किए जाएंगे।महिलाओं और कन्याओं को लाभ पहुंचाने वाली योजनाओं के लिए 3 लाख करोड रुपए से अधिक का आवंटन किया गया है।प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान द्वारा जनजाति बहुल गांवों और आकांक्षी जिलों में जनजाति परिवारों का सामाजिक आर्थिक विकास हेतु 63000 गांव में लागू किया जाएगा।5 करोड़ जनजाति जनसंख्या लाभान्वित होगी ।उत्तर पूर्वी क्षेत्र में इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक की 100 शाखाएं प्रारम्भ करने हेतु बजट में प्रावधान किया गया है।

प्राथमिकता 4- विनिर्माण और सेवा क्षेत्र को बढ़ाना- गिरवी या तृतीय पक्ष गारंटी के बिना मशीनरी और उपकरण की खरीद के लिए एमएसएमई को आवधिक लोन की सुविधा देने के लिए ऋण गारंटी की योजना का प्रावधान किया गया है। संकट की अवधि के दौरान एमएसएमई को ऋण सहायता बैंक द्वारा जारी रखने के लिए नई व्यवस्था का प्रावधान किया गया है। तरुण श्रेणी के मुद्रा लोन की सीमा को 10 से बढ़ाकर के 20 लाख रुपए कर दिया गया है।ट्रेड्स में अनिवार्य रूप से शामिल होने के लिए कारोबार की सीमा को 500 करोड रुपए से ढाई सौ करोड़ का प्रावधान है। लोन, ई-कॉमर्स ,शिक्षा, स्वास्थ्य, विधि ,न्याय ,लॉजिस्टिक्स, एमएसएमई सेवा प्रदाय और शहरी शासन के क्षेत्र में डिजिटल सार्वजनिक अधोसंरचना डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर अनुप्रयोगों का प्रावधान सरकार ने किया है।

प्राथमिकता 5- शहरी विकास- 30 लाख से अधिक जनसंख्या वाले 14 बड़े शहरों में कार्यान्वयन और वित्त पोषण रणनीति के साथ आवागमन उन्मुख विकास योजनाएं तैयार की जाएंगी। प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी 2.0 के अंतर्गत 2.2 लाख करोड रुपए की केंद्रीय सहायता सहित 10 लाख करोड रुपए के निवेश से अगले 5 वर्ष में एक करोड़ शहरी गरीब और मध्यम वर्ग के परिवारों की आवास आवश्यकताओं का समाधान किया जाएगा।अगले 5 वर्ष में प्रत्येक वर्ष चुनिंदा शहरों में 100 साप्ताहिक हॉट या बाजार स्ट्रीट फूड हब के विकास में सहायता के लिए नई योजना का प्रावधान किया है।

प्राथमिकता 6- ऊर्जा सुरक्षा- रोजगार विकास और पर्यावरण की आवश्यकताओं के बीच संतुलन कायम करने के लिए समुचित ऊर्जा परिवर्तन की दिशा में एक नीतिगत दस्तावेज तैयार करना। पंप स्टोरेज पॉलिसी विद्युत भंडारण के लिए पंप स्टोरेज परियोजना को बढ़ावा देने की नीति प्रस्तावित है ।परमाणु ऊर्जा के लिए और भारत स्मॉल रिएक्टर की स्थापना हेतु नई प्रौद्योगिकियों के लिए सरकार निजी क्षेत्र के साथ साझेदारी करेगी। उन्नत अल्ट्रा सुपर क्रिटिकल प्रौद्योगिकी के प्रयोग से 800 मेगावाट का वाणिज्यिक संयंत्र स्थापित करने के लिए एनटीपीसी और भेल के बीच एक संयुक्त उद्यम प्रस्तावित है।

प्राथमिकता 7- अधोसंरचना विकास- अधोसंरचना विकास हेतु निवेश के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। पूंजीगत व्यय के लिए 1111111 करोड़ रुपए का प्रावधान मोदी की गारन्टी है। राज्यों को आधारभूत संरचना को बढ़ाने के लिए डेढ़ लाख करोड रुपए की ब्याज रहित लंबी अवधि के लोन का प्रावधान मोदी की गारंटी है।25000 गांव के लिए बारहमासी सड़क बनाने के लिए पीएमजीएसवाय का चौथा चरण आरंभ किया जाएगा। बिहार में कोसी मची अंतर राज्य लिंक और अन्य योजनाओं के लिए 11500 करोड रुपए की वित्तीय सहायता का प्रावधान है। सरकार असम हिमाचल प्रदेश उत्तराखंड सिक्किम को सहायता प्रदान करेगी।

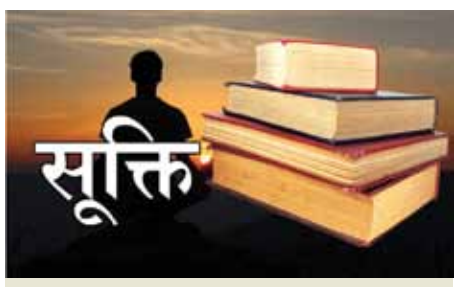

एक बुद्धिमान व्यक्ति के प्रश्न में ही आधा उत्तर छिपा रहता है।

सोलोमन इब्न गेबिरोल

हमारी पहचान हमेशा हमारे द्वारा छोड़ी गई उपलब्धियों से होती है।

अमरीकी कहावत

शुभ संवत 2081 शाके 1946, सौम्य गोष्ठ, श्रावण कृष्ण पक्ष, वर्षा ऋतु, गुरु उदय पूर्व, शुक्रोदय पश्चिमी तिथि चौथ/पंचमी, गुरुवासरे, पू.मा. नक्षत्रे, शोभन योगे, कौलव करणे, मीन की चंद्रमा, मीन राशि दिनांक 2/46 तक यायी जय योग रा. 8/29 तक पंचक प्रारंभ त्रिपुस्कर योग तथापि उत्तर दिशा की यात्रा शुभ उत्तम होगी।

आज जन्म लिए बालक का फल.....

आज जन्म लिया बालक योग्य, बुद्धिमान, चपल, चतुर, चंचल, स्वाभिमानी, कुशल वक्ता-अधिवक्ता, शासक-प्रशासक, उत्तम वृत्ति वाला, योगी-भोगी, धनी-मानी, खेती में पटु तथा धार्मिक कार्य में निपुर्ण होगा।

मेष राशि - धन लाभ होगा, योजना फलीभूत होगी, कार्य कुशलता से संतोष व कार्य अवश्य बनेंगे।

वृष राशि - मनोबल संवेदनशील रहेगी, आशानुकूल सफलता का हर्ष होगा तथा लाभ होगा।

मिथुन राशि - मनोबल उत्साहवर्धक होगा, व्यवसायिक क्षमता में वृद्धि अवश्य होगी, कार्य पर ध्यान दें।

कर्क राशि - मनोवृत्ति संवेदनशील रहेगी, आशानुकूल सफलता का हर्ष होगा, समय का ध्यान रखें।

सिंह राशि - धन लाभ, आशानुकूल सफलता से संतोष होगा, व्यवसायिक कार्य बनेंगे ध्यान दें।

कन्या राशि - इष्ट मित्र से मान-प्रतिष्ठा, प्रभुत्व वृद्धि होगी, सोचे कार्य समय पर बनेंगे।

तुला राशि - कुटुम्ब की समस्याओं में धन का व्यर्थ व्यय होगा, मानसिक कठिनाई होगी, धैर्य रखें।

वृश्चिक राशि - आर्थिक योजना पूर्ण होगी, सफलता के साधन बनेंगे, इष्ट मित्र सुखवर्धक होगा।

धनु राशि - धन लाभ, अधिकारियों से मेल-मिलाप, परिश्रम से कार्य पूर्ण होंगे ध्यान दें।

मकर राशि - कार्यवृत्ति में सुधार होगा, स्थिति नियंत्रण में रहेगी, स्त्री वर्ग से हर्ष-उल्लास होगा।

कुंभ राशि - विशेष कार्य स्थगित रखें, मानसिक विभ्रम तथा उद्विग्नता की स्थिति बनेगी।

मीन राशि - प्रयत्न सफल होगा तथा इष्ट मित्र सहायक रहेगा, दैनिक कार्यगति अनुकूल होगी।

घबराहट और तनाव के शिकार होते बच्चे

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

देखा जाए तो कोरोना के बाद से बच्चों में डिप्रेशन और एंजाइटी का रोग तेजी से बढ़ा है। कोरोना की दहशत के हालात, लॉकडाउन, वर्क फ्रॉम होम और बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई के साइड इफैक्ट सामने आने लगे हैं। ऑनलाइन स्टडी के चलते बच्चे तरह-तरह के ऐप से रूबरू होने लगे। इससे बालपन सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ। ऑनलाइन गेम्स की लत और सोशल मीडिया के प्रति बढ़ा आकर्षण नकारात्मक प्रभाव डालने में सफल रहा है। देखा जाए तो खेल-खेल में बच्चे ना चाहते हुए भी तनाव और एंजाइटी के दौर में प्रवेश कर जाते हैं। बदलती जीवनशैली और सामाजिक-आर्थिक सिनेरियो में सर्दी जुकाम की तरह एंजाइटी यानी कि घबराहट और डिप्रेशन आज के बच्चों में आम होता जा रहा है। जानी-मानी साइक्रेट्रिक मैगजीन जामा साइक्रेट्री में हालिया प्रकाशित एक रिपोर्ट में यह दावा किया गया है। मनोवैज्ञानिकों ने 11 से 15 साल के बच्चों के बीच अध्ययन किया और खासतौर से यह समझने की कोशिश की कि जिस तरह से सर्दी जुकाम संक्रामक बीमारी है और एक से दूसरे में फैल जाती है उसी तरह से एंजाइटी या डिप्रेशन भी एक बच्चे से दूसरे बच्चे को प्रभावित कर सकता है क्या? अध्ययन में पाया गया कि घबराहट या एंजाइट प्रभावित बच्चे के लक्षण साथ वाले बच्चे में भी विकसित होते हैं। यह अध्ययन एक-दो नहीं बल्कि सात लाख बच्चों में किया गया है। हालात की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि फिनलैंड विश्वविद्यालय के शोधार्थियों के अध्ययन में यह साफ हुआ है कि छह में से एक व्यक्ति बैचेनी यानी कि एंजाइटी से प्रभावित रहने लगा है। कोरोना के बाद इस तरह के मरीजों की संख्या में 60 फीसदी तक की बढ़ोतरी देखी जा रही है। यदि अध्ययनकर्ताओं की मानें तो कोविड 19 के बाद हालात तेजी से विकट हुए हैं। खासतौर से पैसों वालों व बुजुर्गों की बीमारी से बच्चे भी प्रभावित होने लगे हैं। बैचेनी, घबराहट, हाथों में कंपन, नींद ना आना, चिड़चिड़ापन, तनावग्रस्त, कुंठा आदि लक्षण दिखने लगते हैं। इससे बच्चों में नकारात्मकता भी आ जाती है। अधिक चिंता की बात यह है कि यह बीमारी बच्चों में संक्रामक रोग की तरह फैलती जा रही है। लॉकडाउन के साथ ही पेरेंट्स की अंधी प्रतिस्पर्धा और अधिक से अधिक पाने की लालसा, बच्चों के बीच परस्पर सहयोग, समन्वय, मित्रता, सहभागिता के स्थान पर संवेदनहीनता और गलाकाट प्रतिस्पर्धा के परिणाम सामने आने लगे हैं। बच्चों में कुंठा तो आम होती जा रही है। रही सही कसर सोशल मीडिया ने पूरी कर दी है। सोशल मीडिया जो परस्पर संवाद का माध्यम बन सकता है वह तनाव का प्रमुख कारण बनता जा रहा है। लाइक-अनलाइक और कमेंट्स बालमन को नकारात्मक रुप से प्रभावित करता जा रहा है। ऑनलाइन अध्ययन के चलते बच्चों में मोबाइल का शौक लग गया है और उसका नकारात्मक असर वीडियो गेम्स के रूप में देखा जा सकता है । बच्चे को गेम के चक्कर में डिप्रेशन में चले जाते हैं। ओटीटी प्लेटफार्म भी अपना असर दिखाने लगा है। रील्स का तो कहना ही क्या? यह कहा जा सकता है कि बालमन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाले सभी कारक मौजूद हैं। शिक्षण संस्था हो या परिवार खासतौर से एकल परिवार के हालात हालात और भी गंभीर हैं। हालात यहां तक पहुंचे गए हैं बच्चों में आक्रामकता तेजी से घर रही है। बात-बात पर झगड़ना आमबात हो गई है। समाज विज्ञानियों के सामने भी यह गंभीर समस्या चुनौती बन गई है। हालात बद से बदतर हों उससे पहले समस्या की गंभीरता को समझना होगा। दादा-दादी और नाना-नानी कहीं पीछे छूट रहे हैं। अभिभावक अवकाश में परिवार के साथ समय बिताने के स्थान पर घूमने जाना पसंद करने लगे हैं जिससे परिवार और परिवार से मिलने वाले संस्कार खोते जा रहे हैं। अत्यधिक तनाव के कारण बच्चों को आत्महत्या जैसे कदम उठाते देखा जा रहा है। दुनिया के देशों में जिस तरह से बच्चों को छोटी उम्र में ही हिंसक होते देखा जा रहा है, वह सबके सामने गंभीर चुनौती है। इसका समाधान नहीं खोजा गया तो आने वाली पीढ़ी किसी भी हालत में हमें माफ नहीं करेगी।

बजट में रक्षा क्षेत्र के साथ हुआ न्याय

आर.के. सिन्हा

केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने देश का साल 2024-25 का बजट पेश करते हुए रक्षा क्षेत्र के लिए 4.54 लाख करोड़ का प्रस्ताव किया। यह संयोग ही है कि कारगिल विजय दिवस (26 जुलाई) से चंदेक दिन पहले ही संसद में पेश आम बजट में रक्षा क्षेत्र के लिए ठीक-ठाक राशि का ही प्रस्ताव किया गया। भारत अपने रक्षा बजट की किसी भी सूरत में अनदेखी नहीं कर सकता। कारण हम सबको पता है। हमारे दो गैर-जिम्मेदाराना हरकतों के लिये कुख्यात पड़ोसी-चीन और पाकिस्तान भारत के कट्टर शत्रु देश हैं। इनसे भारत के कई युद्ध भी हो चुके हैं। इसके अलावा, पाकिस्तान तो भारत में आतंकवाद को लगातार हवा-पानी देता रहता है। यह हमने हाल ही में जम्मू में भी देखा। जम्मू क्षेत्र में आतंकी हमलों में वृद्धि के मद्देनजर, थल सेनाध्यक्ष जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने विगत 20 जुलाई को जम्मू का दौरा भी किया था। वह वहां सुरक्षा स्थिति की समीक्षा करने के लिए गए थे। इस दौरान उन्होंने आला सैनिक अफसरों के साथ आतंकवाद को कुचलने की रणनीति पर भी बातचीत की थी। जम्मू में इस साल छह अलग-अलग आतंकी हमलों में 11 सशस्त्र बल कर्मियों की मौत हो चुकी है। इसके अलावा, पिछले महीने आतंकियों ने रियासी में एक बस पर फायरिंग की थी। इसके बाद बस के खाई में गिरने से 9 यात्रियों की मौत हो गई थी। इसके अलावा अक्टूबर 2021 से आतंकवादी डोडा, कठुआ और रियासी जैसे क्षेत्रों में और भी अंदर तक पहुंच गए हैं। पिछले महीने जनरल मनोज पांडे से सेना प्रमुख के रूप में पदभार संभालने के बाद से जनरल द्विवेदी का जम्मू क्षेत्र का यह दूसरा दौरा था। तो बहुत साफ है कि भारत के रक्षा क्षेत्र के सामने बहुत चुनौतियां है। उसे पाकिस्तान और चीन की करतूतों से लगातार लड़ना पड़ता है। भारत की पाकिस्तान से 1947, 1965, 1971 और फिर करगिल में जंग हुई। चीन से भी हमारी भीषण जंग 1962 में हुई। कुछ साल पहले चीन से दोकलम में भी लड़ाई की ही नौबत आ चुकी थी । लेकिन, भारत की कुशल कूटनीति से युद्ध टल गया था। भारत के चीन और पाकिस्तान से कई विषयों पर विवाद हैं। इसीलिए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने समझदारी पूर्वक रक्षा बजट के लिए एक बड़ी राशि देने का प्रस्ताव रखा। चीन ने 1962 की जंग के बाद हमारे अक्सईचिन पर अपना जबरदस्ती कब्जा जमा लिया था। यह क्षेत्र 37,244 वर्ग किलोमीटर है जिसमें अनेक गलैशियर भरे पड़े हैं। यह पूरे कश्मीर घाटी जितना बड़ा

इलाका है। भारत को उस चीन द्वारा जबरदस्ती ढंग से कब्जाए क्षेत्र को वापस तो लेना ही है। चीन हमारे अरुणाचल प्रदेश पर भी गिद्ध दृष्टि रखता है। तो भारत को अपने रक्षा बजट को निरंतर बढ़ाने के साथ सेना के सभी अंगों को और मजबूत तो करना ही होगा। इस बारे में कोई बहस संभव नहीं है। भारत लगातार अपने रक्षा क्षेत्र को बदलते वक्त के साथ तैयार भी कर रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 15 अगस्त, 2019 को चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीए) पद सर्जित करने की घोषणा की थी। यह कदम भारतीय सशस्त्र बलों में आपसी तालमेल को बढ़ावा देने के लिए किया गया था। हालांकि यह पहल कारगिल युद्ध के 18 साल बाद हुई। आप जानते हैं कि कारगिल युद्ध में भारत ने पाकिस्तान के गले में अंगूठा डाल दिया था। कारगिल युद्ध भारतीय सेना और राष्ट्रीय खुफिया एजेंसियों के लिए एक बड़ा झटका था। 84 दिनों तक चला यह युद्ध 15,000 फीट की ऊँचाई पर 200 किलोमीटर लम्बी सीमा पर लड़ा गया। यह युद्ध भारतीय सेना के लिए प्रमुख सुधारों और नवीनीकरण का उत्प्रेरक बना । देश की सरहदों की निगाहबानी करने वालों के लिए कारगिल का सबसे बड़ा सबक था - अप्रत्याशित की उम्मीद करना। भारतीय सेना ने कभी नहीं सोचा था कि जनरल परवेज मुशर्राफ के नेतृत्व में पाकिस्तानी सेना कारगिल सेक्टर में घुसपैठ करेगी।कारगिल युद्ध का एक महत्वपूर्ण सबक यह भी था कि भारत को आधुनिक हथियारों और गोला-बारूद में आत्मनिर्भर होना होगा। यह तो जाहिर है कि भारत सरकार रक्षा क्षेत्र के सामने कभी धन की कमी महसूस नहीं होने देती। जब देश के इर्द-गिर्द दो बड़े शत्रु राष्ट्रों की सरहदें मिलती हो तब भारत से यह अपेक्षा करना उचित ही नहीं होगा कि वह अपने रक्षा बजट में कटौती करने की सोचे भी। अगर बात आम बजट में रक्षा क्षेत्र के लिए धन की आवंटन से हटकर करें, तो भारत को अपने रक्षा क्षेत्र में लगातार सुधार करते ही रहना होगा। यह अच्छी बात है कि सरकार सेना, नौसेना और वायु सेना के एकीकरण पर ध्यान केंद्रित कर रही है, जो संकट के समय में उनके बीच बेहतर समन्वय सुनिश्चित करेगा। पहले तीनों सेनाएं अपने-अपने स्तर पर काम करती थीं। मौजूदा सरकार ने उनके एकीकरण पर ध्यान केंद्रित किया, जो लीक से हटकर कर एक अलग कदम था और यह समय की मांग भी थी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा भी था सेना के तीनों अंगों में समन्वय का काम थोड़ा कठिन था; लेकिन, अब हमारी सेना बेहतर समन्वय के साथ हर चुनौती से निपटने के लिए मिलकर काम करने को तैयार रहती है। कुछ लोगों का विचार था, स्वदेशी हथियार विश्व स्तरीय नहीं होंगे; लेकिन, वर्तमान सरकार घरेलू उद्योग की क्षमताओं में विश्वास करती है। यह जान लीजिए कि कोई भी सेना बाहर से आयातित उपकरणों से अपने देश की रक्षा नहीं कर सकती है और आज के समय में भारत के लिए रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता आवश्यक है। आत्मनिर्भरता की दिशा में भारत सरकार के लगातार प्रयास अब लाभ देने लगे हैं, क्योंकि; भारत का रक्षा उत्पादन एक लाख करोड़ रुपये से अधिक हो चुका है। उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु में रक्षा औद्योगिक गलियारे स्थापित करने जैसी पहल के माध्यम से सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि आधुनिक सैन्य साजो-सामान न केवल भारत में निर्मित हो, बल्कि उन्हें मित्र देशों को भी निर्यात किया जाए। पहले भारत को हथियार आयातक राष्ट्र के रूप में जाना जाता था। लेकिन, आज भारत अपने कम्फर्ट जोन से बाहर आ गया हैं और हमने हथियार निर्यातक शीर्ष-25 देशों की सूची में जगह बना ली है। कुछ साल पहले तक भारत के रक्षा क्षेत्र का निर्यात 1,000 करोड़ रुपये तक भी नहीं पहुंच पाता था, जबकि आज यह 16,000 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। सरकार को 2028-29 तक वार्षिक रक्षा उत्पादन तीन लाख करोड़ रुपये और रक्षा निर्यात 50,000 करोड़ रुपये तक पहुंचने की आशा है। संक्षेप में इतना ही कहना काफी होगा कि भारत सरकार को अपने रक्षा क्षेत्र पर लगातार फोकस देते रहना ही उचित होगा।

शब्द पहेली - 8199

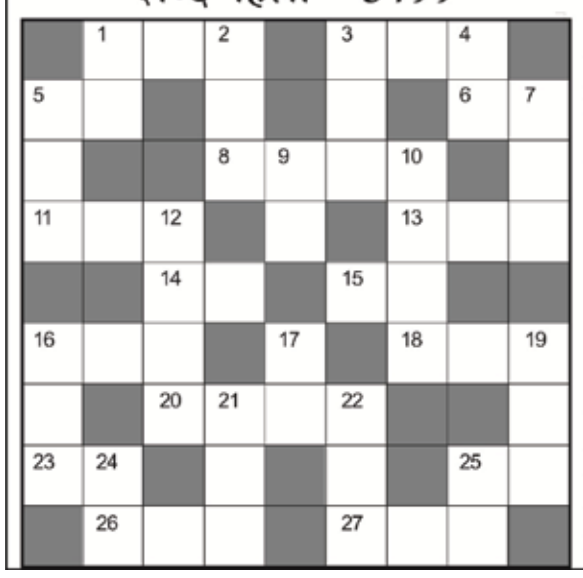

बाएँ से दाएँ

1. कथा, गाथा-3
3. भगौना-3
5. पुष्पहार-2
6. वायदा, कसम-2
8. अभिष्ट इच्छापूर्ति, वर-4
11. योग्य, उपयुक्त-3
13. चिंतन, सोच-विचार-3
14. ताश का एक खेल-2
15. संजय दत्त की पहली फिल्म-2
16. चेहरा, शक्ल-3
18. चाकू, खंजर-3
20. उकसाना, चकमा देना -4
23. लक्ष, सौ हजार-2
25. ईश्वर, भगवान-2
26. विदा, गमन-3
27. लेखनी, पेन-3

ऊपर से नीचे

1. हुनर, फन-2
2. शांति, वीराना-3
3. चिलमन, ओट, घूंघट-3
4. ज्वालामुखी से निकला गर्म पदार्थ-2
5. माजरा, मुद्दा-3
7. आंगन, बरामदा-3
9. भागना (अंग्रेजी-2)
10. चटपटा, क्षारीय-4
12. कारनामा, करिश्मा-4
16. अच्छे सुर का ज्ञाता-3
17. मालिक, स्वामी-2
19. प्रेम प्रतिद्वंदी (उर्दू-3)
21. बेदखल करना-3
22. फिजूल, व्यर्थ-2
24. गधा, गर्दभ -2
25. एक प्रकार की विदेशी शराब-2

शब्द पहेली -8198 का हल

	ह	ल	क		क	ल	र	व
क	द		ह	ज	मा			र
ह		ना	मी		ल	व		दा
र	च	ना	का	र		सा	ल	न
	र		र		स		ह	
र	स	द		ता	ली	ब	जा	ना
वा		ल	क		के	ला		ट
य			स	ज	दा		ना	क
त	ल	प	र		र	ह	म	

Jagrutidaur.com, Bangalore

सूडोकु नवताल- 7137

मध्यम

2	9		3	1			8	
3	6		2		7		9	
		7			6		2	1
	7		1					
1	3			4			7	2
					5		4	
6	2		4			9		
	5		6		9		1	8
	1			5	3		6	4

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल - 7136 का हल

3	9	7	5	1	4	6	8	2
1	2	8	6	9	3	4	5	7
6	4	5	2	8	7	1	3	9
5	7	3	4	6	9	2	1	8
2	1	9	7	5	8	3	4	6
4	8	6	3	2	1	7	9	5
9	3	2	8	4	6	5	7	1
7	6	1	9	3	5	8	2	4
8	5	4	1	7	2	9	6	3

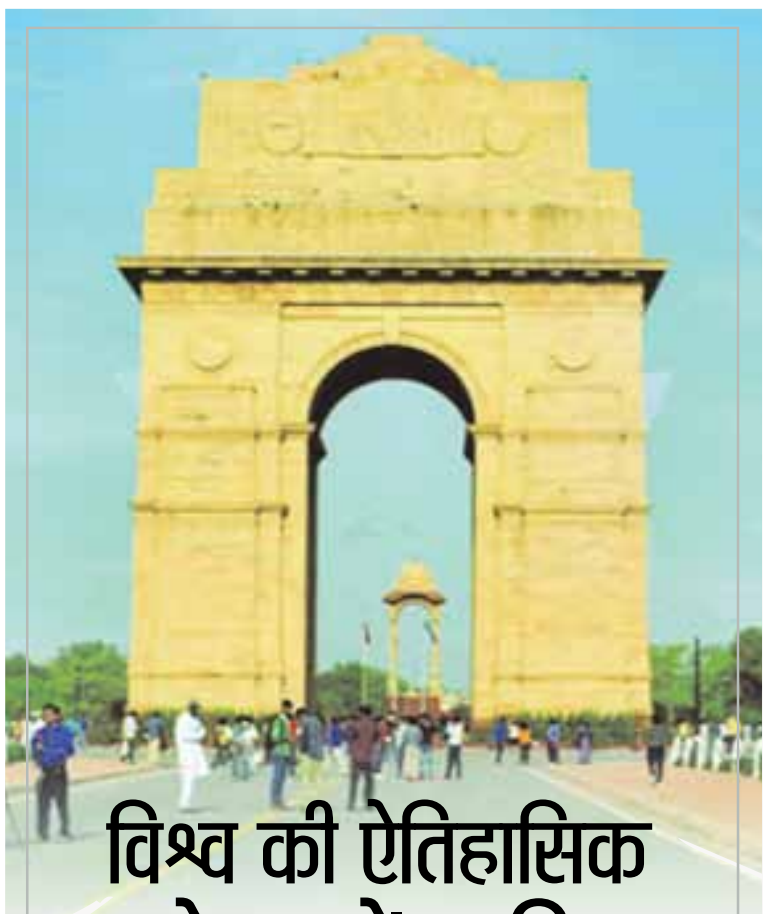

विश्व की ऐतिहासिक धरोहर में शामिल है इंडिया गेट

इंडिया गेट जो विश्व की ऐतिहासिक धरोहर में शामिल एक द्वार है और यह दिल्ली में स्थित है.हर साल लाखों सैलानी इस द्वार को देखने आते हैं.हर साल 26 जनवरी के दिन इंडिया गेट के सामने गणतंत्र दिवस की परेड कराई जाती है.

जी हां दोस्तों आज का हमारा लेख इंडिया गेट से संबंधित है.आज हम आपको इंडिया गेट से जुड़े वे सभी रोचक तथ्य बताने जा रहे हैं जो आपने आज से पहले शायद ही कहीं पढ़े होंगेतो चलिए जानते हैं

- इंडिया गेट की ऊंचाई 43 मीटर है विश्व का सबसे बड़ा युद्ध स्मारक है.
- क्या आप जानते हैं इंडिया गेट को प्राचीन समय में किंग्सवे के नाम से जाना जाता था और इसका डिजाइन सर एडवर्ड लुटियन्स ने बनाया था.
- इंडिया गेट के सामने स्थापित छतरी में जार्ज पंचम की एक मूर्ति स्तापित थी जिसे बाद में यहाँ से हटाकर कोरोनेशन पार्क में स्थापित कर दिया गया था.
- आपको जानकर गर्व होगा इंडिया गेट का निर्माण प्रथम विश्वयुद्ध में शहीद हुऐ 80,000 से अधिक भारतीय सैनिकों की याद में किया गया था.
- क्या आप जानते है इंडिया गेट पर 13300 अधिकारियों और सौनिकों के नाम अंकित हैं.
- इंडिया गेट के नीचे चारों कोनों पर अमर जवान ज्योति हमेशा जलती रहती है जिसे वर्ष 1971 में भारत पाक युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों की याद में स्तापित किया गया था.
- क्या आप जानते है इंडिया गेट की नींव 1921 में ड्यूक ऑफ कनॉट ने रखी थी और इस स्मारक को बनने में पूरे 10 वर्षों का समय लगा था.
- इंडिया गेट को देखने के लिए भारतीय टूरिस्टो के साथ साथ विदेशी सैलानी भी इस द्वार पर आते है.
- शाम के समय इंडिया गेट के चारों ओर लगी रोशनियों से इसे जगमगा दिया जाता है.जिससे एक भव्य दृश्य बनता है जो हमारी आँखों को एक सुखद अहसास देता है.
- आप इस स्मारक के पास से राष्ट्पति भवन को भी निहार सकते है.

अब मछली नहीं उड़ती

बहुत पुरानी बात है। उन दिनों मछलियां तैरने के साथ उड़ भी सकती थीं। मछली का मन करता, तो वह दूर आसमान में जा उड़ती। तैरने का मन करता, तो नदी के अंदर चली जाती।

एक दिन बगुले का जोड़ा कहीं जा रहा था। बगुला मछली से बोला, हमारे अंडों का ध्यान रखना। हम किसी से मिलकर आते हैं।

दोपहर हुई, तो मोर ने मछली से कहा, मोरनी न जाने कहां चली गई? उसे ढूंढ़ने जा रहा हूं। हमारे अंडों का ध्यान रखना। उन सबके लौटने तक मछली ने अंडों का ध्यान रखा।

शाम हुई, तो चुहिया ने मछली से कहा, मैं घूमने जा रही हूं। मेरे बच्चे अकेले हैं। मछली पहरा देने लगी। चुहिया रात को लौटी। मछली जाने को हुई, तो गिलहरी ने आवाज लगाई, अमरूद पक गए होंगे, तो मुझे बताना।

मछली उड़ी और अमरूद के पेड़ के फल देख आई। फिर गिलहरी को बताया, अमरूद पक चुके हैं।

मछली जाने लगी, तो एक सांप ने पूछा, कहां जा रही हो?

मछली बोली, अब थक गई हूं। पानी में तैरने जा रही हूं।

सांप ने हंसते हुए कहा, आज की थकान तो दूर हो जाएगी। मगर कल क्या होगा?

मछली ने चौंकते हुए पूछा, मतलब?

सांप ने जवाब दिया, मतलब यह है कि हर कोई तुम पर रोब जमाता है। मोर, बगुले, चुहिया, गिलहरी तक तुम से अपना काम करा लेते हैं। क्यों?

मछली सोच में पड़ गई।

सुबह हुई। बगुले का जोड़ा मछली के पास आया और वही बात कहकर उड़ चला। मछली को सांप की बात याद थी। उसने मुंह बनाया, हुंह! मैं नदी में तैरने जा रही हूं। शाम तक बाहर नहीं आऊंगी।

बस फिर क्या था। सांप को इसी पल का इंतजार था। बगुलों के वापस आने से पहले वह उनके अंडे खा चुका था।

दोपहर हुई, तो मोर ने मछली से कहा, मोरनी न जाने फिर कहां चली गई। मैं उसे ढूंढ़ने जा रहा हूं। अंडों का ध्यान रखना।

मछली ने मोर की बात को अनसुना कर दिया। वह घने पेड़ के पीछे आराम करने लगी। सांप ने मोरनी के अंडों को भी चट कर डाला।

शाम हुई, तो चुहिया ने मछली को बुलाया। रोज की तरह वह टहलने चली गई। मछली उड़ी और आसमान में गायब हो गई। अब सांप चुहिया के बच्चों को निगल गया।

रात हुई, तो गिलहरी ने मछली से कहा, अमरूद पक गए हैं। मैं भी कुछ अमरूद खा आती हूं। मेरे बच्चों का ध्यान रखना। गिलहरी के जाते ही मछली ने नदी में गोता लगाया। वह तैरती हुई नदी के दूसरे तट पर जा पहुंची। सांप ने गिलहरी के बच्चों को भी अपना निवाला बना लिया।

सुबह हुई, तो सभी ने मछली को घेर लिया। बगुला आगबबूला होकर चिल्लाया, मेरे अंडे कहां हैं?

चुहिया और गिलहरी ने अपने बच्चों के बारे में पूछा। मछली ने जवाब दिया, मुझे क्या पता?

बगुले को गुस्सा आ गया। उसने मछली को दबोच लिया। मछली ने डरते-डरते सारा किस्सा सुनाया।

किस्सा सुनकर चुहिया बोली, एक सांप की बातों में आकर तुमने हमारा भरोसा तोड़ा है। मैं तुम्हें उड़ने लायक नहीं छोड़ूंगी। चुहिया ने मछली के पंख कुतर डाले। गिलहरी ने कहा, आज से तुम उड़ नहीं पाओगी। मछली नदी में जा छिपी।

बगुला बोला, कहां जाती हो। मैं तुम्हें पानी में भी नहीं छोड़ूंगा। तभी से बगुला मछली की ताक में रहता है। वहीं मछली अब उड़ नहीं पाती है।

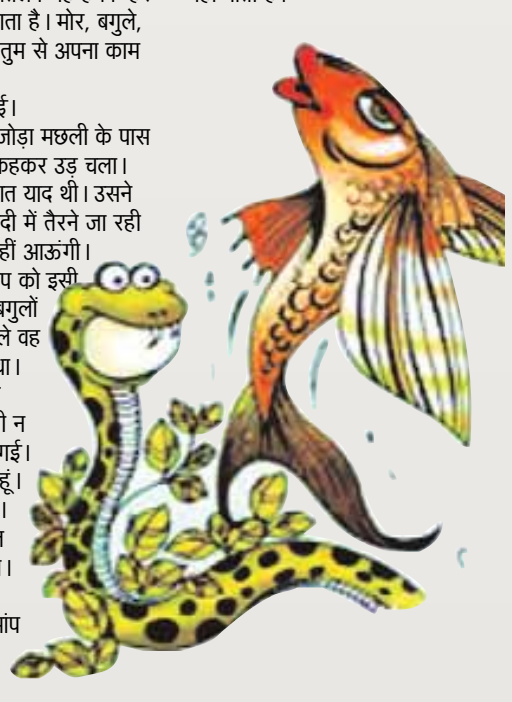

बादलों का सीना चीरकर उड़ने वाले पक्षी बाज के बारे में आप भली-भांति जानते होंगे.बाज एक ऐसा पक्षी है जो बादलों से भी ऊपर उड़ सकता है और इसके साथ ही यह पक्षी बहुत तेज रफ्तार से उड़ता है. उदाहरण के तौर पर बाज 380 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार तक उड़ सकता है.

आसमान का राजा बाज

बाज आसमान में लगभग 12000 फीट ऊंचा उड़ सकता है यह बारिश के दिनों में हमेशा बादलों के ऊपर उड़ता है शायद इसीलिए इसे आसमान का राजा भी कहा जाता है. बाज हवा में एक जगह मंडरा सकते हैं जैसे एक पतंग हवा में एक जगह उड़ती रहती है.एक वैज्ञानिक शोध के अनुसार बाज की नजर बहुत तेज होती है यह अपने शिकार को 5 किलोमीटर दूर से ही देख सकता है साथ ही इनकी आंखों में इन्फ्रारेड सिस्टम विकास हो गया है जिसकी वजह से यह है शिकार के शरीर से निकलने वाली गर्मी को पहचान कर उसका शिकार कर सकता है.बाज की नजर का अंदाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि बाज को आसमान से ही पानी में तैरती हुई मछली दिखाई दे जाती है और बाज पानी में गोता लगाकर मछली को पकड़ सकता है.

बाज की चोंच एक अलग तरह से बनी होती है इनकी चोच 90 डिग्री के कोण पर मुड़ी हुई होती है चोच के दोनों तरफ एक छोटा दांत बाहर निकला हुआ होता है.यह अपने शिकार को देखते हैं लगभग 200 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से शिकार की तरफ बढ़ते है.और जैसे ही कोई मेंढक या चूहा पकड़ते है तो उसकी गर्दन पर ऐसी जगह पर वार करते है जिससे उसका नर्वस सिस्टम काम करना बंद कर देता है. जिसे शिकार मुकाबला नहीं कर पाता है और मारा जाता है.बाज अपने से दो गुना बड़े शिकार को पकड़ सकता है, कभी-कभी यह अपने से इतने बड़े शिकार को पकड़ लेते हैं कि एक बार में उसे खा भी नहीं पाते है.क्थद्दद्यद्व शिकार करके अपने भोजन को ऊंची पहाड़ियों में बने अपने घोसलों में छोड़ देते है. और बाद में जब इन्हें भूख लगती है तब यह उस शिकार को आ कर खा लेते है.बाज की आंखें अपने शिकार को बिना पलक झपकाए अधिक समय तक देख सकती हैं इसी कारण ये अपने शिकार से कम ही चुकते है. बाज एक मांसाहारी पक्षी होता है इसका भोजन सांप, मछली, मेंढक, खरगोश, चूहे और छोटे पक्षी होते है. यह पक्षी लगभग पूरी दुनिया में ही पाया जाता है यह ज्यादातर ऊंची पहाड़ियों और चट्टानों पर अपना घोंसला बनाते है लेकिन ज्यादातर बाज पक्षी दूसरे पक्षियों के घोंसलों पर कब्जा करके यह रहते है.विश्व भर में इसकी 60 से भी अधिक प्रजातियां पाई जाती है.एक वयस्क बाज का वजन लगभग 10 किलो तक हो सकता है.इसके फल का आकार में बहुत बड़े और पतले होते हैं जिसके कारण यह ज्यादा देर तक हवा में उड़ पाते है.मादा बाज पक्षी साल में एक बार 3 से 4 अंडे देती है और जब तक उनमें से उसके बच्चे नहीं निकल आते है वह उनके ऊपर बैठी रहती है. बाज के बच्चे अंडे में से औसतन 35 से 40 दिनों के अंदर बाहर निकल आते है.एक बाज की औसतन आयु 60 से 70 वर्ष होती है.उनके पंख और सोच लगातार बढ़ती रहती है इसलिए जैसे-जैसे यह व्यस्त होते है. इन्हें अपनी चोच से भोजन खाने में दिक्कत होने लगती है इसीलिए यह चट्टानों पर जाकर अक्सर अपनी चोच घिसते रहते है.इनके पंजों की बात करें तो पैर के पंजे बहुत ही ताकतवर और नुकीले होते हैं जिससे यह किसी भी सांप या मछली को अगर एक बार पकड़ ले तो उसके बाद छोड़ते नहीं है.यह पक्षी ज्यादातर अकेले रहना ही पसंद करता है.

- बाज पक्षियों में सबसे बड़ा पक्षी होता है.
- बाज एक मांसाहारी पक्षी है.
- यह मुख्य रूप से भोजन में सांप, मछली, चूहा, मेंढक इत्यादि खाते है.
- बाज आसमान में बिना पंखों को हिलाएं हवा में अधिक समय तक उड़ सकता है.
- यह लगभग दुनिया के हर देश में पाया जाता है और दुनिया भर में इसकी 60 से अधिक प्रजातियां अभी तक खोजी जा चुकी है.
- यह पक्षी अकेले में जंगलों में पहाड़ियों के ऊपर रहना पसंद करता है.
- क्या आप जानते हैं जब भी पक्षियों के राजा की बात आती है तो उनमें बाज का नाम सबसे पहले लिया जाता है.क्योंकि यही एक मात्र ऐसा पक्षी है जो तेज रफ्तार के साथ ही शारीरिक रूप से भी सर्वाधिक शक्तिशाली माना जाता है.
- बाज मांसाहारी जीवो की श्रेणी में आता है और इसका जीवनकाल लगभग 40 वर्ष से लेकर 70 वर्ष का होता है.
- बाज तेजी से उड़ने और सतह पर चलने की लिए भी जाना जाता है. यह पक्षी सतह पर भी गजब की तेजी से दौड़ता है.
- बाज के शरीर की बनावट जैसे छाती की मजबूत मांसपेशियाँ , लम्बे पंख और स्ट्रीमलाइन आकार के फाल्कन सही मायने में इस पक्षी को गजब की रफ्तार देने के लिए ही बने है.
- बाज के शरीर की लंबाई 13 से 23 इंच तक हो सकती है तथा बाज क पंखो लंबाई 29 से 34 इंच तक होती है.इसके साथ ही मादा बाज का आकार नर बाज से बड़ा होता है.
- बाज के पसंदीदा शिकारो में चिड़िया, कबूतर, चूहा ट बत्तख इत्यादि का शिकार ज्यादातर करता है.
- बाज आकाश में 12000 फीट की उंचाई तक उड़ान भर सकता है
- क्या आप जानते है बाज की अब तक लगभग 2000 प्रजाति खोजी जा चुकी है.
- अगर आप बाज को नहीं पहचानते तो इसे जानने के लिए नीली स्लेटी और उसी रंग के लम्बे नुकील पंखो और पेट पर सफेद एवं काले धब्बो से पहचाना जा सकता है.
- आपको जानकर हैरानी होगी द्वितीय विश्व युद्ध में कबूतरों द्वारा भेजे संदेशो को रोकने के लिए घुमन्तु बाज का इस्तेमाल किया जाता था.
- जंगलो में रहने वाले आदिवासी ज्यादातर छोटे -छोटे पक्षियों के शिकार के लिए बाज का सहारा लेते हैं.
- बाज एक ऐसा पक्षी है जो अंटार्टिका के इलावा समूचे विश्व में पाया जाता है.
- बाज ही एकमात्र ऐसा शिकारी पक्षी है जो शिकार के लिए इंसान के 2 साल के बच्चे को भी उठा कर ले जा सकता है.
- मादा बाज 1 से लेकर 3 अंडे देती है और लगभग बाज 34 से 36 दिनों तक अण्डों पर बैठती है जिसके बाद अण्डों में से बच्चे बाहर निकल आते हैं
- क्या आप जानते है एक स्वस्थ बाज 6 किलोग्राम वजन को उठा कर हवा में उड़ सकता है.
- जिस तरह बाज तेजी का प्रतिक माना जाता है ठीक इसी प्रकार बाज के बच्चे का भी बहुत तेजी से विकास होता हैं यह 6 सप्ताह में 3-4 किलो हो जाता हैं.
- बाज की नजर भी बहुत तेज होती है उदाहरण के तोर पर यह अपने शिकार को 5 किलोमीटर की दूरी पर भी देख लेता है.

प्रति सेकंड 130 फ्रेम देख सकता है पेरग्रिन बाज

पशु-पक्षियों की दुनिया में पेरग्रिन बाज की दृष्टि सबसे तेज होती है। एक अध्ययन के अनुसार, दुनिया के सबसे सामान्य परभक्षी पक्षियों में शुमार यह बाज एक सेकंड में लगभग 130 फ्रेम देख सकता है। स्वीडन की लुंड यूनिवर्सिटी सहित कई शोधकर्ताओं का कहना है कि इसकी तुलना में इंसान प्रति सेकंड अधिकतम 50-60 फ्रेम ही देख पाते हैं। उन्होंने कहा कि कोई शख्स मूवी थिएटर में बतौर फिल्म प्रति सेकंड 25 छवियों की गति ही देख सकता है। वह भी उसे छवियों की शृंखला के रूप में नहीं देख सकता है। जर्नल ऑफ एक्सपेरिममेंटल बायोलॉजी में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, पेरग्रिन बाज की दृष्टि सबसे तीव्र होती है। तेज प्रकाश वाले वातावरण में उसकी दृष्टि 129 एचजेड (प्रति सेकेंड पलक झपकाना) होती है। इन्हीं परिस्थितियों में सेकर बाज 102 एचजेड और हैरिस की देखने की क्षमता 77 एचजेड होती है। ऐसा पहली बार है, जब वैज्ञानिकों ने परभक्षी पक्षियों की दृष्टि की गति का अध्ययन किया है। इसके लिए उन्होंने यह गणना की कि वे कितने दृश्यों का अनुभव कर सकते हैं। अध्ययन के सह लेखकों में एक लुंड यूनिवर्सिटी के एल्मट केल्बर ने कहा, 'मेरे सहयोगी साइमन पोटियर और मैंने सेकर और हैरिस प्रजाति के बाजों का अध्ययन किया। इस दौरान यह भी गणना की कि ये कितनी तेज रोशनी में झपकी ले सकते हैं।' शोधकर्ताओं ने कहा कि परभक्षी पक्षियों की नजर शिकार की जरूरत के हिसाब से हरकत करती है। आमतौर पर बाज तेज गति से उड़ने वाली पक्षियों का शिकार करते हैं और अपनी तीव्र दृष्टि से उन पक्षियों के सचेत होने से पहले ही उन्हें पकड़ लेते हैं।

350 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से शिकार करता है

शोधकर्ताओं ने बताया कि हैरिस नामक बाज के पास अत्यधिक ऊंचाइयों पर शिकार करने के लिए बहुत तेज दृष्टि नहीं होती है, क्योंकि वह जमीन पर छोटे और धीमी गति वाले जानवरों का शिकार करते हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार, पेरग्रिन बाज के पास अलग-अलग दृश्यों में खुद की दृष्टि को समायोजित करने की क्षमता होती है, क्योंकि यह एक फॉर्मूला वन रेसिंग कार की गति यानी 350 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से अपने शिकार पर हमला बोलती है।

पिंजरे में रखे गए पक्षियों की स्थिति समझने में मिलेगी मदद

यह अध्ययन छोटे कीटों को खाने वाली पक्षियों की देखने की क्षमता का पता लगाने के लिए किया गया है। शोधकर्ताओं ने का कहना है कि बाजों के शिकार की कला यह भी बताती है कि परभक्षी पक्षियों की दृष्टि बहुत तीव्र होती है। शोधकर्ताओं के अनुसार, इस अध्ययन से मिली नई जानकारी से कैद में रखे गए पक्षियों की स्थिति को बेहतर तरीके से समझने में मदद मिलेगी।

अजीब है कस्तूरी बैल

बैल के बारे में आप लोग तो कुछ न कुछ जानते ही होंगे। लेकिन आप लोगों को आज एक ऐसे बैल के बारे में बताते हैं, जिसके बारे में शायद ही आप लोग जानते हों। यह बैल है कस्तूरी बैल। है न रोचक बात! आप लोग मस्क डीयर यानी कि कस्तूरी हिरण के बारे में जानते होंगे, लेकिन कस्तूरी बैल के बारे में नहीं। यह बैल भले ही अपने यहां नहीं पाया जाता, लेकिन यह कुछ एक देशो में पाया जाता है।

कस्तूरी बैल बिल्कुल याक जैसा दिखता है। यह वृक्षहीन टुन्ड्रा प्रदेश और आर्कटिक प्रदेशों का निवासी है। पूर्वी अलास्का से लेकर उत्तरी कनाडा तक और ग्रीनलैंड में पाया जाता है।इसकी दो प्रजातियां होती हैं। एक ग्रीनलैंड मस्क ऑक्स या व्हाइट फेस्ड मस्क ऑक्स। दूसरी प्रजाति केनेडियन हाई-आर्कटिक मस्क ऑक्स होती है।

दिखता है याक जैसा

यदि आप इसे दूर से देखो तो आप को भ्रम हो जाएगा। आपको लगेगा कि यह याक है, लेकिन ऐसा होता नहीं है। इसका शरीर काफी गठीला होता है। उस पर फर की दोहरी परत होती है। बाहरी परत लम्बे-लम्बे फर वाली होती है। कभी-कभी इसके बाल इतने लम्बे होते हैं कि जमीन को भी छूने लगते हैं। इनके मोटे फरों का रंग गहरा भूरा होता है। इनके फर ही बर्फीले आर्कटिक की शीत लहरों में ठंड से बचाव करते हैं। इनके बाल भेड़ के बालों की तरह ऊन बनाने के काम आते हैं। इनके फर गर्मी के मौसम में झड़ने लगते हैं।

विशालकाय शरीर

इसके कंधों पर कूबड़ होता है। इसके सींग लम्बे,चौड़े और मुड़े हुए होते हैं। इसके खुर बैलों से काफी बड़े होते हैं। इसके विशालकाय शरीर का वजन 200 किलोग्राम से 400 किलोग्राम तक हो सकता है, जबकि शरीर की लम्बाई छह फुट से साढ़े सात फुट के मध्य होती है और ऊंचाई पांच फुट तक होती है। इसके गठीले शरीर के कारण ही शिकारी जानवर जल्दी हमला नहीं कर पाते। ये अक्सर झुंड में ही रहते हैं, इसलिए शिकारी जानवरों पोलर बीयर, आर्कटिक फॉक्स और आर्कटिक भेड़ियों से अपनी रक्षा कर लेते हैं।

नहीं खाता मांस

आप लोग सोच रहे होंगे कि बर्फ में रहने की वजह से इसका भी भोजन मांस होगा, लेकिन ऐसा नहीं है। यह बिल्कुल भी मांसाहारी नहीं है। घास, आर्कटिक फूल, मरकट और बहुत प्रकार की वनस्पति खाता है। वैसे इसे 'विलो प्लांट' खाना ज्यादा अच्छा लगता है। यह अपना भोजन चबाता नहीं है, बल्कि उसे निगल जाता है।

इंग्लैंड के एक क्लब ने छक्के मारने पर रोक लगायी

लंदन। आप को ये बात भले ही अजीब लगे पर इंग्लैंड के एक क्लब ने खिलाड़ियों के छक्के मारने पर रोक लगा दी है। साउथविक और शोरहैम क्रिकेट क्लब ने बल्लेबाजों पर ये प्रतिबंध इसलिए लगाया है ताकि मैदान के करीब रहने वालों को कोई नुकसान न पहुंचे। क्लब के पास करीब रहने वालों की ओर से संपत्ति को हो रहे नुकसान की कई शिकायतें आई थी। वहीं के बाद उसने ये फैसला लिया। अब क्लब के मुकाबलों के दौरान छक्का मारने वाले बल्लेबाज को आउट करार दिया जाएगा। साउथविक और शोरहैम क्रिकेट क्लब के कोषाध्यक्ष मार्क ब्रोक्सअप ने छक्के पर प्रतिबंध के नियम की घोष्णा की है। क्लब ने ये फैसला बीम क्लेम और कानूनी कार्यवाही से होने वाले आर्थिक नुकसान से बचने के लिए लगाया है। क्लब को स्टेडियम के आस पास रहने वाले लोगों की गाड़ियों और घर की संपत्ति को छक्के की वजह से होने वाले नुकसान के कारण काफी रकम अदा करनी पड़ रही थी। इसी हर्जाने से बचने के लिए क्लब को ये फैसला लेना पड़ा है। ब्रोक्सअप ने कहा, पहले क्रिकेट बेहद शांत माहौल में खेला जाता था लेकिन टी20 और एकदिवसीय के आने के बाद इस खेल में आक्रामकता हावी हो गयी है। इस वजह से स्टेडियम आस पास रहने वाले लोगों की संपत्ती को नुकसान पहुंचने लगा है। नये नियम के बाद अब पहला छक्का मारने के बाद बल्लेबाज को चेतावनी मिलेगी और कोई रन भी नहीं मिलेगा। इसके बाद भी अगर बल्लेबाज नहीं माने तो उसे आउट करार दिया जाएगा।

नौकायम में विष्णु सरवनन पर रहेंगी नजरें

नई दिल्ली। पेरिस ओलंपिक में भाग ले रहे नौकाचालक विष्णु सरवनन पर सभी की नजरें रहेंगी। सरवनन को भी पेरिस ओलंपिक में बेहतर प्रदर्शन की उम्मीदें हैं। सरवनन ने इस साल की शुरू में ऑस्ट्रेलिया में हुई आईएलसीए 7 पुरुष विश्व चैम्पियनशिप में जीत के साथ ही दूसरी बार ओलंपिक के लिए क्वालीफाई किया है। पिछली बार हुए टोक्यो ओलंपिक में वह बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाये थे पर इस बार वह कोई कसर नहीं रखना चाहते। सरवनन ने कहा, ''टोक्यो में मैं निर्भीक होकर खेला था। वो मेरा पहला ओलंपिक था तो मुझे इसी कारण परिणाम की अधिक चिन्ता नहीं थी और मेरा ध्यान अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पर था।'' वह पिछले एक महीने से मार्सेल में साइप्रस के पावलोस कोंटाइड्स और क्रोएशिया के रियो टोन्सी स्टिपनोविच के साथ अभ्यास कर रहे हैं। उन्होंने कहा, ''मैं भाग्यशाली रहा हूं कि मुझे ओलंपिक स्थल में ट्रेनिंग लेने का मौका मिला और मेरे साथ ओलंपिक पदक जीतने वाले खिलाड़ी शामिल हैं। ' साथ ही कहा ऑस्ट्रेलिया में हुई आईएलसीए में वह अनुभवी नौकाचालकों के होने के बाद भी दबाव में नहीं आने के कारण बेहतर प्रदर्शन कर पाये थे। उन्होंने कहा, ''इस दौरान मैंने पाया कि आप अनुभवी खिलाड़ियों से अपने को कम नहीं आंक सकते। आपको उस स्तर तक जाना होगा जिसमें आप अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकें और उसको देखा जाये तो मेरे में सुधार आया है।।'' उन्होंने कहा, '' मैं आत्मविश्वास से भरा था और मैं हार नहीं मानने के जज्बे से खेल रहा था तो मैं उन्हें हराना चाहता था।''

पेरिस ओलंपिक में हर मैच पर ध्यान दूंगी : मनिका

नई दिल्ली। महिला टेबल टेनिस खिलाड़ी मनिका बत्रा ने कहा है कि इस बार वह पेरिस ओलंपिक में पदक जीतने के लिए अपनी ओर से पूरे प्रयास करेंगी। मनिका ने कहा है कि वह इस बार कोई गलती नहीं करते हुए हर मैच के हिसाब से रणनीति बनाएंगी। साथ ही कहा कि शुरुआती दौर में पदक नहीं मैच पर उनका ध्यान रहेगा।ओलंपिक की तैयारियों में व्यस्त इस खिलाड़ी ने कहा कि उसे पिछले ओलंपिक के अनुभवों से काफी कुछ सीखने को मिला है। मनिका ने कहा,''पिछले ओलंपिक खेलों से मुझे काफी कुछ सीखने को मिला है और मैंने जो गलतियां वहां की थी उनको इस बार नहीं दोहराऊंगी। उसके बाद मेरी मानसिकता बदली है। मैं अधिक शांत हो गई हूं और मेरा अपने पर भरोसा बढ़ गया है।'' उन्होंने कहा,''मैं अपनी ताकत और फुर्ती पर ध्यान दे रही हूं और मेरा वास्तविक लक्ष्य पदक के लिए चुनौती पेश करना है। मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ूंगी। मैं उस जगह पर पहुंचने का प्रयास कर रही हूं जहां मैं अपना सबसे अच्छा प्रदर्शन कर सकूं।'' मनिका ने कहा,''मैं मैच दर मैच आगे बढ़ूंगी और शुरू में ही पदक के बारे में नहीं सोचूंगी। मैं अपने देश के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहूंगी।'' भारतीय महिला टीम को पेरिस ओलंपिक के लिए प्रवेश दिलाने में इस खिलाड़ी के प्रदर्शन की अहम भूमिका रही थी। महिला टीम पहली बार ओलंपिक में उतरेगी। बत्रा ने कहा,'' भारतीय टेटे टीम ने पहली बार ओलंपिक के लिए क्वालीफाई किया और यह बड़ी उपलब्धि है। मैं इस बात से बहुत खुश हूं कि हम शिविर में एकसाथ अभ्यास कर रहे हैं। मुझे लगता है कि हमारे पास पदक जीतने का मौका है और हमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहिए।''

अमेरिकी क्रिकेट बोर्ड में विवाद गहराया

दुबई। अमेरिका क्रिकेट बोर्ड में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। अमेरिकी क्रिकेट के निदेशक कुलजीत सिंह, अर्जुन सोना और पैट्रिशिया विटटेकर ने बोर्ड अध्यक्ष वेणु पिसिके और उनकी टीम पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे हैं और उनकी शिकायत अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) से भी की है। कुलजीत के अनुसार बोर्ड अध्यक्ष अपने लाभ के लिए पद का गलत इस्तेमाल कर रहे हैं। साथ ही कहा कि इसी कारण टी20 विश्वकप की मेजबानी के दौरान भी काफी शिकायतें मिली थी। निदेशकों ने आईसीसी को भेजी अपनी शिकायत में कहा है कि उन्होंने अन्य निदेशकों के लिए माहौल खराब करने का प्रयास किया है। इसके साथ ही सीईओ नूर मुराद को मानमाने तरीके से हटा दिया गया। ये भी आरोप हैं कि अध्यक्ष ने अवैध रूप से चुनावी लाभ के लिए बोर्ड के संविधान में भी बदलाव किया। संवैधानिक संशोधन किया और भ्रष्टाचार भी किया है। ये भी कहा गया है कि बोर्ड अपने खिलाफ जाने वाले लोगों को हटाने तक की कार्रवाई कर रहा है। इसके साथ ही कहा कि सदस्यता प्रबंधन कंपनी के चयन में भी भ्रष्टाचार किया गया है। इसके लिए केवल 3 कंपनियों को ही प्रस्ताव भेजा गया, जिनमें एक कंपनी का मालिक अध्यक्ष का करीबी था।

ओलंपिक स्वर्ण जीतने पर सबसे अधिक इनाम सर्बिया देगा

नई दिल्ली। 26 जुलाई से होने वाले पेरिस ओलंपिक खेलों में दुनिया भर के शीर्ष खिलाड़ी भाग लेंगे। ओलंपिक में पदक कितना मायने रखता है इसका अंदाजा इसी से होता है कि इसमें भाग ले रहे खिलाड़ियों पर जीत के बाद इनामों की बारिश हो जाती है और वे रातों रात स्टार बन जाते हैं। सभी देश अपने खिलाड़ियों को प्रेरित करने इनामों की भी घोषणा करती है। इस बार सबसे अधिक इनाम की घोषणा सर्बिया सरकार ने की है। विजेता को रिकॉर्ड 2.15 लाख डॉलर करीब 1.79 करोड़ रुपए देने की घोषणा की है। ये ओलिम्पिक इतिहास में किसी एथलीट को उसके देश की सरकार की ओर से दी जाने वाली सबसे बड़ी राशि है। सर्बिया के अलावा मलेशिया और मोरक्को ने भी स्वर्ण पदक विजेता को करीब 2 लाख डॉलर करीब 1 करोड़ रुपये का इनाम देने की घोषणा की है। वहीं भारत ने सभी स्वर्ण पदक विजेताओं के लिए 75 लाख रुपए के पुरस्कर की घोषणा की है। हैरानी की बात है कि अमेरिका ने 61 लाख रुपए के इनाम की घोषणा की है। सबसे अधिक इनाम की घोषणा करने वाले सर्बिया का रिकॉर्ड ज्यादा अच्छा नहीं है। उन्होंने अब तक के ओलंपिकों में कुल 24 पदक ही जीते हैं जिनमें 6 स्वर्ण , 7 रजत और , 11 कांस्य शामिल हैं। वहीं भारत सरकार की ओर से स्वर्ण विजेता को 75 लाख, रजत विजेता को 50 लाख जबकि कांस्य पदक विजेता को 30 लाख रुपये का प्रस्ताव दिया गया है।

व्यापार

महिंद्रा थार रोक्स 15 अगस्त को होगी लॉन्च

नई दिल्ली। स्वदेशी कंपनी महिंद्रा की अपकमिंग गाड़ी का नाम महिंद्रा थार रोक्स होगा। कंपनी की यह कार आगामी 15 अगस्त को लॉन्च होगी महिंद्रा ने अपकमिंग थार का टीजर शेयर कर डिजाइन की झलक दिखाई है। महिंद्रा थार आरओएक्सएक्स में 3-डोर मॉडल की तुलना में कई बड़े अपडेट देखने को मिल रहे हैं। इसके फ्रंट फेसिया में गोलाकार एलईडी हेडलैंप और इंटीग्रेटेड एलईडी डे-टाइम रनिंग लाइट के साथ एक अपडेटेड ग्रिल दिख रही है। इसमें नए एलॉय व्हील्स, रियर फेंडर के ठीक ऊपर की 4×4 बैजिंग, ब्लैक कलर में व्हील आर्च क्लैडिंग और सी-शेप्ड एलईडी टेल लैम्प भी देखे जा सकते हैं। उम्मीद की जा रही है कि इसमें ज्यादा बड़ा बूट स्पेस भी मिलेगा। फीचर्स अपकमिंग महिंद्रा थार में लंबे पिलर्स के साथ बॉक्सी शेप, वर्टीकल स्लेटेड फ्रंट ग्रिल, गोल आकार की हेडलाइट्स, फ्लेयर्ड व्हील आर्च, अपराइट टेलगेट पर लगे स्पेयर व्हील, मस्कुलर बंपर सेक्शन, रेक्टेंगुलर टेल लैंप्स, वायरलेस स्मार्टफोन कनेक्टिविटी सपोर्ट के साथ 9-इंच का टचस्क्रीन इन्फोटेनमेंट सिस्टम, वायरलेस चार्जर, ऑटोमैटिक एसर, मल्टी-फंक्शनल स्टीयरिंग व्हील, रूफ माउंटेड स्पीकर्स, मल्टीपल एयरबैग्स, हिल स्टार्ट कंट्रोल, ईएसी समेत कई फीचर्स मिलने की उम्मीद है। इस गाड़ी में एक 2.0-लीटर टर्बो पेट्रोल इंजन, 2.2-लीटर डीजल इंजन और 1.5-लीटर डीजल इंजन मिल सकता है। 1.5-लीटर डीजल इंजन को छोड़कर ये बाकी 2 पावरट्रेन इसके 3- डोर मॉडल में पहले से मिल रहे हैं। बता दें कि कंपनी का अपने नए मॉडल को लाने का उद्देश्य अपनी अनूठी डिजाइन, उन्नत तकनीक और बेहतर प्रदर्शन के साथ एसयूवी बाजार में तहलका मचाना है।

जल्द आ रहा मोटोरोला का नया स्मार्टफोन

मिलेगी 68वॉट की चार्जिंग, लुक भी जबरदस्त

नईदिल्ली (ईएमएस)। मोटोरोला कंपनी का नए स्मार्टफोन जल्द लॉन्च होने वाला है। फोन की लॉन्च डेट के बारे में कंपनी की तरफ से अभी कोई ऑफिशियल जानकारी नहीं दी गई है। कंपनी के इस अपकमिंग फोन का नाम मोटोरोला एग्ज 50 नीयो है। इस फोन के फोटोज लीक कर दिये है। इस लीक में फोन के कलर और डिजाइन को देखा जा सकता है। शेयर किए गए फोटो से अंदाजा लगाया जा रहा है कि कंपनी इस फोन में 6.4 इंच का फुल एचडी+ पीओएलईडी ऑफर कर सकती है। इसके रियर में तीन कैमरे दिए गए हैं। फोन वीगन लेदर फिनिश और पैंटोन कलर्स में आएगा। लीक रिपोर्ट्स के अनुसार कंपनी इस फोन में 6.4 इंच का फुल एचडी+ पीओएलईडी डिस्प्ले ऑफर कर सकती है। यह डिस्प्ले 120 एचझेड के रिफ्रेश रेट को सपोर्ट करेगा। मोटोरोला का यह नया फोन 12जीबी तक की एलपीडीडीआर 4एक्स रैम और 256जीबी तक के इंटरनल स्टोरेज ऑप्शन में आ सकता है। प्रोसेसर के तौर पर फोन में कंपनी माली जी 615 एमसी2 जीपीयू के डाइमेंसिटी 7300 प्रोसेसर दिया जा सकता है। बैटरी की जहां तक बात है, तो फोन की बैटरी 4310 एमएएच की हो सकती है। यह बैटरी 68वॉट की फास्ट चार्जिंग को सपोर्ट करेगी। यह फोन आईपी 68 वॉटर और डस्ट रेसिस्टेंट रेटिंग के साथ आएगा। ओएस की बात करें, फोन ऐंड्रॉयड 14 पर काम करेगा। कनेक्टिविटी के लिए इस फोन में 5जी एसए/एनएसए, ड्यूल 4जी वीवोएलटीई, वायफाय 6 802.11 एएक्स, ब्लूटूथ 5.4, जीपीएस और यूएसबी टाइप-सी जैसे ऑप्शन देखने को मिल सकते हैं। फोटोग्राफी के लिए फोन में मोटोरोला एलईडी फ्लैश के साथ तीन कैमरे दे सकता है।इनमें 50 मेगापिक्सल के मेन लेंस के साथ एक 13 मेगापिक्सल का अल्ट्रावाइड ऐंगल कैमरा और एक 10 मेगापिक्सल का कैमरा शामिल हो सकता है।

कम कीमत वाली एसयूवी में भी दिए जा रहे छह एयरबैग

नई दिल्ली। भारत में अब कम कीमत वाली एसयूवी में भी छह एयरबैग ऑफर किए जा रहे हैं। हुंडई मोटर्स की ओर से भारतीय बाजार में एक्सटेर एसयूवी को ऑफर किया जाता है। कंपनी की इस एसयूवी में छह एयरबैग ऑफर किए जाते हैं। यह सेफ्टी फीचर एसयूवी में स्टैंडर्ड तौर पर दिया जाता है। जिसका मतलब है कि इसके बेस वेरिएंट में भी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा गया है। छह एयरबैग के साथ आने वाली यह देश की सबसे सस्ती एसयूवी है। इसकी कीमत 6.12 लाख रुपये एक्स शोरूम से शुरू हो जाती है। महिंद्रा की ओर से अप्रैल के आखिर में एक्सयूवी 3एक्सओ को लॉन्च किया गया था। कंपनी की यह एसयूवी छह एयरबैग के साथ आती है। कंपनी ने इसे 7.49 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर भारतीय बाजार में ऑफर किया है।10 लाख रुपये से कम कीमत पर मिलने वाली इस एसयूवी में कई और फीचर्स को भी दिया जाता है। इसकी एक्स शोरूम कीमत 7.94 लाख रुपये से शुरू हो जाती है। किआ की ओर से भी सोनेट एसयूवी को बेहतरीन फीचर्स और सेफ्टी के साथ ऑफर किया जाता है। वेन्यू की तरह ही इसमें भी छह एयरबैग ऑफर किए जाते हैं।

एसयूवी के सभी वेरिएंट में इस फीचर को दिया जाता है। किआ सोनेट की एक्स शोरूम कीमत 7.99 लाख रुपये से शुरू होती है।टाटा की ओर से नेक्सन एसयूवी को ऑफर किया जाता है। इस एसयूवी को कंपनी की ओर से कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में लाया जाता है। सेफ्टी के लिए इसमें भी छह एयरबैग मिलते हैं। इसकी एक्स शोरूम कीमत भी 7.99 लाख रुपये से शुरू हो जाती है।

पुतिन ने टोयोटा प्रमुख समेत 12 उद्योगपतियों को रुस में आने पर लगाया बैन

मास्को। रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने टोयोटा प्रमुख समेत 12 हाई प्रोफाइल उद्योगपतियों का अपने देश रूस में आने पर बैन लगा दिया है। कार बनाने वाली कंपनी टोयोटा के चेयरमैन अकियो टोयोडा और 12 अन्य वरिष्ठ जापानी उद्योगपति नेताओं पर यह बैन जापान की ओर से हाल ही में उठाए गए कदम के बाद लगाया गया है। इसका टोक्यो से कड़ा विरोध किया है लेकिन रूस के विदेश मंत्रालय ने सूची प्रकाशित कर दी है। इस सूची में टोयोटा के चेयरमैन अकियो टोयोडा, राकुटेन के प्रमुख हिरोशी मिकितानी और जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी के अध्यक्ष अकिहिको तनाका शामिल हैं। जापान, यूक्रेन का बड़ा सहयोगी बनकर उभरा है और इससे रूस और जापान के बीच संबंध पहले से ज्यादा खराब हो गए हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इससे पहले शांति संधि वार्ता को निलंबित कर दिया गया था और बाद में पीएम फुमियो किशिदा समेत जापानी सांसदों पर प्रवेश प्रतिबंध लगाया गया। रुस के विदेश मंत्रालय के मुताबिक यह फैसला विशेष सैन्य अभियान के संबंध में जापान द्वारा रुस के विरुद्ध लगाए गए प्रतिबंधों की प्रतिक्रिया है। हालांकि मंत्रालय ने यह नहीं बताया कि जिनका चयन किया गया, वह क्यों किया गया और इसमें मित्सुबिशी, होंडा और सोनी जैसी प्रमुख फर्मों के चीफ क्यों शामिल नहीं हुए, यह भी नहीं बताया गया।

शेयर बाजार की गिरावट के साथ खुरूआत

मुम्बई। घरेलू शेयर बाजार की बुधवार को कमजोर शुरुआत हुई। सप्ताह के तीसरे ही कारोबारी दिन सुबह बाजार खुलते ही 30 शेयरों वाला बीएसई 89 अंक करीब 0.11 फीसदी नीचे आकर 80,339 के स्तर पर पहुंचा गया। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी भी 0.17 फीसदी ऊपर आकर 24,438 पर पहुंच गया। वहीं इसके विपरीत मिडकैप इंडेक्स में 0.41 फीसदी और स्मॉलकैप इंडेक्स में 1 फीसदी की बढ़त हुई। सेंसेक्स में शामिल कंपनियों में उपभोक्ता उत्पाद बनाने वाली आईटीसी और जूलरी, घड़ियां तथा चश्मे जैसे प्रोडक्ट बनाने वाली कंपनी टाइटन के शेयर ऊपर आये। बजट में सोने और चांदी के आया शुल्क को कम करने के प्रस्ताव के बाद टाइटन के शेयरों में तेजी आई है। वहीं ग्रामीण क्षेत्र पर ध्यान से उपभोक्ता क्षेत्र की कंपनियों की स्थिति बेहतर होने की उम्मीद है जिससे रही। वहीं जून तिमाही के लाभ में बढ़त के बाद भी उपभोक्ता क्षेत्र की कंपनी हिंदुस्तान यूनिलीवर का शेयर शुरूआती कारोबार में तीन फीसदी तक नीचे आया। इसके साथ ही नेस्ले इंडिया, बजाज फाइनेंस, एचसीएल टेक, मारुति के शेयर भी गिरावट में कारोबार करते दिखे।

डॉक्यूमेंट्री मॉडर्न मास्टर्स : एस.एस. राजामौली का ट्रेलर जारी

2 अगस्त को नेटफ्लिक्स पर होगा प्रीमियर

इंडियन फिल्म इंडस्ट्री के दिग्गज डायरेक्टर एस.एस राजामौली की बायोपिक डॉक्यूमेंट्री मॉडर्न मास्टर: एस.एस राजामौली का ट्रेलर रिलीज हो चुका है. मॉडर्न मास्टर: एस.एस राजामौली की हाल ही में रिलीज डेट का एलान हुआ था. मॉडर्न मास्टर: एस.एस राजामौली आगामी 2 अगस्त को डिजिटल पर्दे के टॉप ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम होने जा रही है. एस.एस राजामौली ने पिछली बार फिल्म आरआरआर बनाई थी. इस फिल्म ने वर्ल्डवाइड बॉक्स ऑफिस पर 1000 करोड़ रुपये से ज्यादा नोट छापे थे और इस फिल्म के सुपरहिट सॉन्ग नाटू-नाटू को बेस्ट ओरिजिनल सॉन्ग कैटेगरी में ऑस्कर मिला था. बता दें, मॉडर्न मास्टर: एस.एस राजामौली का ट्रेलर नेटफ्लिक्स ने अपने ऑफिशियल एक्स हैंडल पर भी शेयर किया है. ट्रेलर में राजामौली ने ऑस्कर विनिंग फिल्म आरआरआर, बाहुबली और बाहुबली 2 को कैसे बनाया है, इसकी झलक दिख रही है. वहीं, साउथ सिनेमा के सुपरस्टार जूनियर एनटीआर, राम चरण, प्रभास, करण जौहर और हॉलीवुड की हिट डायरेक्टर जेम्स कैमरून (टाइटैनिक और अवतार) पूरे ट्रेलर में फिल्म निर्देशक की तारीफ के पुल बांध रहे हैं. एक जगह पर जूनियर एनटीआर अपनी फिल्म आरआरआर के डायरेक्टर के लिए कहते दिख रहे हैं कि यह इंसान सिर्फ फिल्म बनाने के लिए पैदा हुए हैं, यह ऐसी कहानी दिखा और सुना रहे हैं जो कभी देखने और सुनने को नहीं मिली है. वहीं, प्रभास कहते हैं उनका काम देख कभी-कभी मैं शॉक्ड हो जाता हूं. वहीं, राम चरण ने कहा, जब भी मैं उनकी फिल्म देखता हूं तो खुद को थर्ड पर्सन की भूमिका में पाता हूं. ट्रेलर के अंत में राजामौली कहते हैं कि जिस चीज का मैं गुलाम हूं वो सिर्फ मेरी कहानी है. बता दें, अपलोज एंटरटेनमेंट और फिल्म कंपेनियन स्टूडियोज ने मिलकर राजामौली की बायोग्राफिकल डॉक्यूमेंट्री का निर्माण किया है. मॉडर्न मास्टर: एस.एस राजामौली के डायरेक्टर राघव खन्ना हैं.

जाह्नवी कपूर की फिल्म उलझ का पहला गाना शौकन हुआ रिलीज

टाइट गाउन में अभिनेत्री ने दिखाई कातिल अदाएं

राजकुमार राव के साथ मिस्टर एंड मिसेज माही की सफलता के बाद अब अभिनेत्री जाह्नवी कपूर फिल्म उलझ के जरिए दर्शकों का मनोरंजन करने को तैयार हैं।फिल्म के निर्देशन की कमान सुधांशु सरिया ने संभाली है। रोशन मैथ्यू, गुलशन देवैया और आदिल हुसैन जैसे सितारे भी इस फिल्म का हिस्सा हैं।हाल ही में फिल्म का ट्रेलर सामने आया था।इसके अलावा अजय देवगन की औरों में कहां दम था भी 2 अगस्त को रिलीज होगी। गाने में जान्हवी के साथ गुलशन देवैया भी हैं। दोनों एक क्लब में डांस करते हुए और काफी एन्जॉय करते नजर आ रहे हैं। शौकन सोनी म्यूजिक इंडिया के लेबल के तहत रिलीज किया गया है। गाने के बारे में जान्हवी ने कहा, मैं हमेशा से नेहा कक्कड़ के गानों की फैन रही हूं, और उनके साथ काम करना मेरी विश लिस्ट में शामिल था। शौकन में पहली बार उनके साथ काम करने का मौका मिला। यह गाना आपको डांस फ्लोर पर जाने के लिए मजबूर कर देगा। यह हॉट, ग्लैमरस और ग्रूवी है। मुझे लगता है कि शाश्वत, जुबिन और नेहा ने शानदार गाना तैयार किया है। फिल्म में जान्हवी सबसे कम उम्र की डिप्टी हाई कमिश्नर सुहाना भाटिया का किरदार निभा रही हैं। उनके सलेक्शन पर सवाल खड़े होते हैं। कुछ लोग आरोप लगाते हैं कि सुहाना की नियुक्ति में नेपोटिज्म का काफी हाथ है, क्योंकि वह एक समृद्ध परिवार से हैं। वह अपने विभाग में अपनी जगह बनाने के लिए काफी मशक्कत करती हैं। ट्रेलर में दिखाया गया है कि जान्हवी लंदन एंबेसी की एक खबरी की तलाश में निकलती हैं और खुद ही उसके जाल में फंस जाती हैं। अपने ऊपर लगे देशद्रोह का आरोप हटाने के लिए और देश की रक्षा करने के लिए वह उन लोगों से भी भिड़ती हैं, जिन्होंने उन्हें और उनके देश को धोखा दिया है। जान्हवी कपूर ने फिल्म का ट्रेलर इंस्टाग्राम पर शेयर किया था और कैप्शन में लिखा, हर किसी के पास एक कहानी है।

कल्कि 2898 एडी ने आरआरआर को पछाड़ा, हिंदी बेल्ट में तीसरी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली बनी साउथ फिल्म

साउथ सुपरस्टार प्रभास स्टारर माइथोलॉजी और साइंस-फिक्शन फिल्म कल्कि 2898 एडी ने बॉक्स ऑफिस पर अपने शानदार 25 दिन पूरे कर लिए हैं. इन 25 दिनों में कल्कि 2898 एडी ने बॉक्स ऑफिस पर कमाई के कई रिकॉर्ड तोड़े हैं. साथ ही वर्ल्डवाइड 1000 करोड़ का आंकड़ा पार कर चुकी कल्कि 2898 एडी ने कई रिकॉर्ड भी बनाए हैं. बता दें, कल्कि 2898 एडी बॉक्स ऑफिस पर अपने चौथे वीकेंड में चल रही है. कल्कि 2898 एडी ने इन 25 दिनों में घरेलू बॉक्स ऑफिस पर 600 करोड़ रुपये से ज्यादा कमा लिए हैं. फिल्म ने बीते तीन दिनों में 17.4 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है. वहीं, फिल्म ने हिंदी पट्टी में इन 25 दिनों में 275.9 करोड़ रुपये कमा लिए हैं. ऐसा कर कल्कि 2898 एडी ने साल 2022 में रिलीज हुई जूनियर एनटीआर और राम चरण स्टारर फिल्म आरआरआर का रिकॉर्ड तोड़ दिया है. सैकनिल्क के अनुसार, आरआरआर ने हिंदी बेल्ट में 272 करोड़ रुपये का बिजनेस किया था. वहीं, कल्कि 2898 एडी का इंडिया नेट कलेक्शन 616.95 करोड़ रुपये हो चुका है और इसकी नजर अब बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान की एक्शन ड्रामा फिल्म जवान (2023) के घरेलू कलेक्शन (643.87 करोड़ रुपये) पर है. अगर कल्कि 2898 एडी ने जवान के इस रिकॉर्ड को तोड़ दिया तो वो घरेलू बॉक्स ऑफिस पर चौथी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन जाएगी. वहीं, वर्ल्डवाइड बॉक्स ऑफिस पर कल्कि 2898 एडी 1000 करोड़ रुपये कमाने वाली इंडियन फिल्म इंडस्ट्री की 7वीं फिल्म बन चुकी है और साल 2024 की एकमात्र पहली फिल्म है.

हृता दुर्गुले ने कमांडर करण सक्सेना के लिए सिर्फ छह सेशन में बाइक चलाना सीखा

ओटीटी प्लेटफॉर्म डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर रिलीज हुई कमांडर करण सक्सेना को काफी पॉजिटिव रिस्पांस मिल रहा है। दर्शक सीरीज में मौजूद किरदारों की सराहना कर रहे हैं। इस कड़ी में एक्ट्रेस हृता दुर्गुले ने अपने किरदार एसीपी रचना म्हात्रे से लोगों के दिलों पर अपनी छाप छोड़ी है। अपने किरदार को दमदार बनाने के लिए उन्होंने बाइक चलाना सीखा। हृता दुर्गुले ने कहा कि उन्हें बाइक चलाने से डर लगता था, लेकिन कमांडर करण सक्सेना में अपने किरदार के लिए तैयारी करते हुए इस पर काबू पाया। उन्होंने मात्र छह सेशन में इस स्किल को सीखा। एक्ट्रेस ने कहा, शो की मीटिंग में मेकर्स ने मुझसे पूछा कि क्या मैं बाइक चला सकती हूं। मैंने कहा कि मैं बाइक चलाने के अलावा सब कुछ कर सकती हूं, लेकिन मैं इसे सीखूंगी। 10-12 दिनों के बाद, मुझे बताया कि मैं सीरीज में रचना म्हात्रे का किरदार निभा रही हूं, और मैंने अप्रैल में बाइक चलाने की ट्रेनिंग लेना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा, इसमें छह सेशन लगे। हाइट की वजह से मेरे पैर जमीन तक नहीं पहुंच रहे थे। एक्ट्रेस ने कहा, मेरे स्किल सेट में एक और चीज शामिल हुई है। मैं बाइक चलाना जारी रखूंगी, क्योंकि यह अब मुझे बहुत आसान लगता है। मैं 18 साल की उम्र से कार चला रही हूं, 13-14 साल हो गए हैं। मैं रिक्शा चला सकती हूं, मैं एम्बुलेंस चला सकती हूं, मैं कुछ भी चला सकती हूं। बाइक चलाने को लेकर मेरे अंदर एक बड़ा डर था। किसी तरह, मैंने इसे मैनेज किया, और जिस बाइक का हमने इस्तेमाल किया वह बहुत भारी थी, इसलिए मुझे इस बात की भी चिंता थी। लेकिन मुझे बहुत खुशी है कि मैं कमांडर करण सक्सेना के लिए यह कर सकी। कमांडर करण सक्सेना एक रॉ एजेंट की कहानी है, जिसका किरदार गुरमीत चौधरी ने निभाया है। वह एक देशभक्त है और भारत को बचाने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। शो का निर्देशन जतिन वागले ने किया है। इसमें इकबाल खान विलेन के रोल में हैं। उन्होंने आईएसआई चीफ नासिर का किरदार निभाया है। कमांडर करण सक्सेना डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर प्रसारित है।

खूबसूरत साड़ी पहन रश्मिका मंदाना ने कैमरे के सामने दिए किलर पोज

हॉट अदाओं से इंटरनेट पर बरपाया कहर

साउथ और बॉलीवुड इंडस्ट्री की खूबसूरत हसीना रश्मिका मंदाना आए दिन अपनी हॉट फोटोज इंस्टाग्राम अकाउंट पर पोस्ट करती रहती हैं। उनका हर एक अंदाज सोशल मीडिया पर आते ही तेजी से वायरल होने लगता है। हाल ही में रश्मिका मंदाना ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें इंस्टा पर पोस्ट कर फैंस को दीवाना बना दिया है। उनके इस लुक पर से फैंस की नजरें हट पाना मुश्किल हो गई है। एक्ट्रेस रश्मिका मंदाना आए दिन अपनी लेटेस्ट पोस्ट फैंस के बीच शेयर कर अक्सर लाइमलाइट बटौरती रहती हैं। उनका हर एक लुक इंटरनेट पर पोस्ट होते ही छा जाता है। हाल ही में एक्ट्रेस के लेटेस्ट एथनिक लुक में फोटोज इंस्टाग्राम पर वायरल हो रही हैं। इन तस्वीरों में उनका कातिलाना अवतार देखकर फैंस लट्टू हो गए हैं। रश्मिका मंदाना ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट के दौरान नीले रंग की साड़ी पहनी हुई थी, जिसमें वो बला की खूबसूरत नजर आ रही थीं। कानों में इयररिंग्स, बालों में गजरा और लाइट मेकअप कर के एक्ट्रेस रश्मिका मंदाना ने अपने आउटलुक को कंप्लीट किया है। एक्ट्रेस ने अपनी इस साड़ी के साथ ब्लू कलर का स्टाइलिश ब्लाउज पहना हुआ है जोकि उन पर काफी जंच रहा है। रश्मिका मंदाना ने जिस तरह से अपने आउटफिट को कैरी किया है वो बेहद ही लाजवाब है। एक्ट्रेस जब भी अपनी पोस्ट शेयर करती हैं तो फैंस उनकी फोटोज पर दिलखोलकर लाइक्स और कॉमेंट्स करती हैं। एक्ट्रेस सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। रश्मिका मंदाना की इंस्टाग्राम पर फैन फॉलोइंग लिस्ट काफी तगड़ी है।

धनुष की 50वीं फिल्म रायन को मिला ए कैटेगरी का सर्टिफिकेट, एडवांस बुकिंग ओपन

इस हफ्ते बॉक्स ऑफिस पर साउथ सिनेमा से साउथ सुपरस्टार धनुष की एक्शन-थ्रिलर और मारकाट वाली फिल्म रायन रिलीज के लिए तैयार है. रायन को धनुष ने लिखा और खुद डायरेक्ट किया है. यह दूसरी बार है जब धनुष ने कोई फिल्म डायरेक्ट की है. रायन आगामी 26 जुलाई को रिलीज होने जा रही है. रिलीज से चार दिन पहले रायन की एडवांस बुकिंग भी शुरू हो गई है. धनुष ने एक एक्स पोस्ट के जरिए इसकी जानकारी दी है. धनुष ने फिल्म रायन से अपना खून से लथपथ एक पोस्टर भी शेयर किया है. वहीं, बीते दिन रायन के प्री-रिलीज इवेंट में धनुष ने अपनी अगली फिल्म का भी एलान कर दिया है. इधर, फिल्म रायन को सेंसर बोर्ड ने ए (वयस्क) कैटेगरी का सर्टिफिकेट थमाया है. धनुष की एडवांस बुकिंग की बात करें तो सैकनिल्क के अनुसार, 22 जुलाई को दोपहर 2 बजे तक फिल्म रायन ने तमिल भाषा में 665 शोज के लिए 34,233 टिकट सेल कर 48,22,604.41 रुपये कमा लिए हैं. वहीं, तेलुगू में फिल्म ने 133 शोज के लिए 3,920 टिकट सेल कर 6,88,975 रुपये बटोर लिए हैं. रायन ने ऑल इंडिया में 798 शोज के लिए 38,153 टिकट सेल किए हैं, जिससे उसकी कुल कमाई 55,11,5,79 रुपये हो गई है.

रायन तमिल के साथ-साथ हिंदी और तेलुगू में भी रिलीज होगी. धनुष की बतौर एक्टर रायन 50वीं फिल्म है. बीती 21 जुलाई की रात हैदराबाद में फिल्म रायन का प्री-रिलीज इवेंट हुआ. इस इवेंट में फिल्म की स्टारकास्ट धनुष, प्रकाश राज, नित्या मेनन, दुशारा विजयन, अपर्णा बाला मुरली, सुदीप किशन, कालीदास जयराम और एस जे सूर्या पहुंचे थे. प्रकाश ने खुलासा किया था कि धनुष अपनी नई फिल्म के निर्देशन को लेकर प्लान कर रहे हैं और इस फिल्म में नित्या मेनन लीड रोल में होंगी. आपको बता दें, प्रकाश राज, धनुष और नित्या मेनन फिल्म रायन से पहले फिल्म थिरुचित्रम्बलम में साथ में देखे जा चुके हैं. फिल्म रायन की बात करें तो यह एक आम आदमी की कहानी पर बेस्ड है. यह एक मारकाट से भरी फिल्म है, जिसे देखते हुए केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड ने इसे एडल्ट कैटेगरी सर्टिफिकेट दिया है. फिल्म रायन के निर्माता सन पिक्चर्स है.

सरफिरा और इंडियन 2 का बॉक्स ऑफिस पर बुरा हाल, 10 दिन में आधा बजट भी नहीं कर पाईं वसूल

सिनेमाघरों में इन दिनों कई फिल्में दर्शकों के लिए मौजूद हैं. हालांकि इनमें से कुछ ही बॉक्स ऑफिस पर अच्छा परफॉर्म कर पा रही हैं. हाल ही में अक्षय कुमार स्टारर 'सरफिरा और कमल हासन की मोस्ट अवेटेड फिल्म 'इंडियन 2 सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी. जहां 'सरफिरा की ओपनिंग बेहद खराब रही तो वहीं 'इंडियन 2 ने अच्छी शुरुआत तो की लेकिन फिर इसकी कमाई का ग्राफ गिरता गया. अब दोनों ही फिल्में बॉक्स ऑफिस पर टिकी रहने के लिए संघर्ष कर रही हैं. चलिए यहां जानते हैं 'सरफिरा और 'इंडियन 2 ने रिलीज के 10वें दिन कितना कलेक्शन किया है? पिछले काफी समय से एक अदद हिट के लिए तरस रहे अक्षय कुमार की लेटेस्ट रिलीज 'सरफिरा भी बॉक्स ऑफिस पर औंधे मुंह गिरी हैं. वहीं अब ये फिल्म गिरते-पड़ते दूसरे हफ्ते में पहुंच गई है लेकिन इसकी कमाई की रफ्तार बढ़ने का नाम नहीं ले रही है. 'सरफिरा के कलेक्शन पर नजर डालें तो फिल्म ने 2.5 करोड़ से खाता खोला था. इसके बाद पहले हफ्ते में फिल्म ने 18.75 करोड़ का कलेक्शन किया. वहीं अब 'सरफिरा दूसरे हफ्ते में एंट्री कर चुकी है और इसने रिलीज के दूसरे फ्राइडे 40 लाख की कमाई की तो वहीं दूसरे शनिवार फिल्म ने 85 लाख का कारोबार किया. अब 'सरफिरा की रिलीज के 10वें दिन यानी दूसरे रविवार की कमाई के शुरुआती

आंकड़े आ गए हैं. सैकनिल्क की अर्ली ट्रेंड रिपोर्ट के मुताबिक 'सरफिरा ने रिलीज के 10वें दिन यानी दूसरे रविवार को 1.25 करोड़ का कलेक्शन किया है. इसी के साथ 'सरफिरा की 10 दिनों की कुल कमाई अब 21.25 करोड़ रुपये हो गई है. कमल हासन स्टारर 'इंडियन 2 भी काफी बज और उम्मीदों के साथ सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी. ये फिल्म एक्टर की 1996 में आई 'इंडियन की सिक्वल है. इसी वजह से 'इंडियन 2 को लेकर काफी एक्साइटमेंट थी. हालांकि फिल्म की शुरुआत तो दमदार हुई लेकिन फिर निगेटिव वर्ड ऑफ माउथ के चलते 'इंडियन 2 की कमाई का ग्राफ गिरता चला गया. खासतौर पर हिंदी बेल्ट में 'इंडियन 2 की परफॉर्मेंस काफी खराब रही है. फिल्म की कमाई की बात करें तो 'इंडियन 2 ने 25.6 करोड़ से खाता खोला था. इसके बाद फिल्म ने पहले हफ्ते में 70.4 करोड़ की कमाई की. वहीं अब ये फिल्म रिलीज के दूसरे हफ्ते में एंट्री कर चुकी है और इसने जहां सेकंड फ्राइडे 1.3 करोड़ कमाए तो वहीं दूसरे शनिवार फिल्म ने 1.78 करोड़ का कारोबार किया. अब 'इंडियन 2 की रिलीज के 10वें दिन यानी दूसरे संडे की कमाई के शुरुआती आंकड़े भी आ गए हैं. सैकनिल्क की अर्ली ट्रेंड रिपोर्ट के मुताबिक 'इंडियन 2 ने रिलीज के 10वें दिन यानी दूसरे संडे को 2 करोड़ का कलेक्शन किया है. इसी के साथ 'इंडियन 2 की 10 दिनों की कुल कमाई अब 75.48 करोड़ रुपये हो गई है. 'इंडियन 2 और सरफिरा पहले से ही बॉक्स ऑफिस पर धीमी रफ्तार से आगे बढ़ रही थी. 'बैड न्यूज ने रविवार को 11 करोड़ की कमाई की वहीं 'इंडियन 2 और सरफिरा मुश्किल से चंद करोड़ ही कमा पाई. अक्षय और कमल हासन की फिल्मों की कमाई की रफ्तार देखते हुए जल्द ही इनका बॉक्स ऑफिस से खेल खत्म होता नजर आ रहा है.